हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कण्वघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-13 | अंक-08 | हरिद्वार, रविवार, 01 मार्च, 2026 | मूल्य-दो रूपया मात्र | पृष्ठ-8

दिव्य, भव्य और ऐतिहासिक होगा कुंभ मेला : मुख्यमंत्री

हरिद्वार ,संवाददाता । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को हरिद्वार में आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक में कुंभ मेला-2027 की तैयारियों की समीक्षा की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हरिद्वार में अगले वर्ष आयोजित होने वाला कुंभ मेला दिव्य, भव्य और ऐतिहासिक होगा। मेले के दौरान श्रद्धालुओं के लिए बेहतर सुविधा, सुगमता और सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस महाआयोजन की व्यवस्थाओं में कोई भी कमी नहीं रहने दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कुंभ मेले से संबंधित कार्य निर्धारित समय पर पूर्ण करने के सख्त निर्देश देते हुए कहा कि सभी विभाग बेहतर समन्वय के साथ कार्य करें और लिए गए निर्णयों का अविलंब अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। मेला नियंत्रण भवन, हरिद्वार में आयोजित इस बैठक में मुख्यमंत्री ने मेले की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने पिछली बैठक में दिए गए निर्देशों पर हुई कार्रवाई तथा वर्तमान में चल रहे कार्यों की प्रगति की जानकारी भी ली। मुख्यमंत्री ने मेले से संबंधित सभी कार्य आगामी अक्टूबर माह तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मेले के लिए सभी प्रमुख स्थायी कार्यों को स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है तथा अस्थायी कार्यों के प्रस्तावों को अंतिम रूप देकर उन्हें भी समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए। जोन एवं सेक्टर स्तर पर की जाने वाली तैयारियों को तय लक्ष्यों और समयसीमा के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण ढंग से संपन्न करने के निर्देश दिए गए। निर्माण कार्यों की मॉनिटरिंग हेतु थर्ड पार्टी ऑडिट भी कराने के निर्देश दिए गए। मुख्यमंत्री ने मेले के दौरान परिवहन एवं पार्किंग की प्रभावी एवं पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने पर जोर देते हुए वैकल्पिक मार्गों को चिन्हित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं के सुरक्षित एवं सुविधाजनक आवागमन तथा स्नान की समुचित व्यवस्था की जाए। संभावित भीड़ को ध्यान में रखते हुए स्नान, आवागमन एवं ठहराव के लिए विस्तृत योजना तैयार की जाए। महिला एवं वृद्ध श्रद्धालुओं के लिए विशेष प्रबंध किए जाने के भी निर्देश दिए गए। कुंभ क्षेत्र में स्वच्छता व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्य में स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग भी लिया जाए। स्वास्थ्य सुविधाओं की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि बीमार श्रद्धालुओं को निकटतम स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंचाने के लिए बोट एवं बाइक एंबुलेंस की व्यवस्था की जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कुंभ मेले के सुव्यवस्थित एवं सफल आयोजन के लिए साधु-संतों, अखाड़ों, जनप्रतिनिधियों तथा धार्मिक एवं स्वयंसेवी संगठनों का सहयोग लिया जाए और उनके सुझावों को ध्यान में रखकर कार्य किए जाएं। उन्होंने कुंभ मेले में चाक-चौबंद सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती पर जोर दिया। साथ ही साइबर सुरक्षा, अग्निशमन व्यवस्था तथा रेस्क्यू कार्यों के लिए दक्ष कार्मिकों की तैनाती सुनिश्चित करने को कहा। स्थायी कार्यों की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि कुंभ क्षेत्र में निर्मित सभी पुलों का सुरक्षा ऑडिट कराया जाए तथा आवश्यकता पड़ने पर उनकी मरम्मत समय पर पूर्ण की जाए। गंगा नदी के घाटों के अनुरक्षण हेतु यदि गंग नहर के क्लोजर की आवश्यकता हो तो उत्तर प्रदेश के अधिकारियों से समन्वय स्थापित किया जाए। घाटों के सुदृढ़ीकरण, सुरक्षा रेलिंग तथा फिसलन-रोधी व्यवस्थाएं समय से पूर्ण की जाएं। कुंभ प्रारंभ होने से पूर्व सभी विद्युत लाइनों को भूमिगत कर लिया जाए। कुंभ क्षेत्र में भूमि प्रबंधन एवं आवंटन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इसकी मॉनिटरिंग मेलाधिकारी स्वयं करें तथा क्षेत्र को अतिक्रमणमुक्त रखा जाए। बैठक में कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज, सुबोध उनियाल तथा पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने भी प्रतिभाग करते हुए उपयोगी सुझाव दिए। इस अवसर पर मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका ने बैठक में मेले से संबंधित स्वीकृत कार्यों की प्रगति की जानकारी दी तथा प्रस्तावित कार्यों एवं व्यवस्थाओं पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया। बैठक में सचिव, शहरी विकास विभाग श्री नितेश कुमार झा; सचिव, लोक निर्माण विभाग श्री पंकज कुमार पाण्डे; आयुक्त, गढ़वाल मंडल श्री विनय शंकर पाण्डेय; सचिव, पेयजल श्री रणवीर सिंह चौहान; सचिव, सिंचाई श्री युगल किशोर पंत; सचिव, पर्यटन श्री धीराज गर्ब्याल; अपर पुलिस महानिदेशक श्री ए.पी. अंशुमान; तथा उत्तर रेलवे के मुरादाबाद मंडल की डीआरएम श्रीमती विनीता श्रीवास्तव सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने मेले की तैयारियों की विस्तृत जानकारी दी। बैठक में मेयर हरिद्वार श्रीमती किरन जैसल, मेयर रुड़की श्रीमती अनीता अग्रवाल, मेयर ऋषिकेश श्री शंभू पासवान; विधायक रानीपुर श्री आदेश चौहान, विधायक रुड़की श्री प्रदीप बत्रा, विधायक हरिद्वार ग्रामीण श्रीमती अनुपमा रावत, विधायक ज्वालापुर श्री रवि बहादुर; दायित्वधारी श्री अजीत चौधरी, श्री जयपाल सिंह चौहान, श्री देशराज कर्णवाल, श्री शोभाराम प्रजापति; पूर्व मंत्री एवं प्रदेश उपाध्यक्ष स्वामी यतीश्वरानंद; जिलाध्यक्ष भाजपा हरिद्वार श्री आशुतोष शर्मा, जिलाध्यक्ष रुड़की डॉ. मधु; पुलिस महानिरीक्षक गढ़वाल श्री राजीव स्वरूप; सचिव श्री सी. रविशंकर, श्री आनंद स्वरूप; जिलाधिकारी श्री मयूर दीक्षित; वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री नवनीत सिंह भुल्लर; मुख्य विकास अधिकारी श्री ललित नारायण मिश्रा; अपर जिलाधिकारी श्री पी.आर. चौहान; अपर मेलाधिकारी श्री दयानंद सरस्वती सहित विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने प्रतिभाग किया।

कुंभ मेला की तैयारियां हुई तेज-मेलाधिकारी उतरी ग्राउंड जीरो पर

हरिद्वार ,संवाददाता । हरिद्वार में अगने वर्ष आयोजित होने जा रहे कुंभ मेला के सफल और सुव्यवस्थित आयोजन को लेकर प्रशासनिक तैयारियां तेज गति से आगे बढ़ रही हैं। मेला क्षेत्र में प्रस्तावित आधारभूत संरचनाओं और सुविधाओं को समयबद्ध रूप से धरातल पर उतारने के लिए संबंधित विभागों को जुटा दिया गया है। मेलाधिकारी सोनिका स्वयं लगातार ग्राउंड जीरो पर पहुंचकर व्यवस्थाओं की समीक्षा और निगरानी कर रही हैं, ताकि किसी भी स्तर पर शिथिलता न रहे और कार्य निर्धारित समयसीमा में पूरे हों।

मंगलवार की सुबह मेलाधिकारी ने बैरागी कैंप और दक्षद्वीप क्षेत्र का विस्तृत स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने इन क्षेत्रों में प्रस्तावित सड़कों, घाटों और पुलों की स्थिति का जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि कुंभ मेला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु गंगा स्नान और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में उनकी सुरक्षा, सुविधा और सुगम आवागमन सुनिश्चित करना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। निरीक्षण के दौरान मेलाधिकारी ने बैरागी कैंप क्षेत्र में अखाड़ों और धार्मिक संस्थाओं के लिए चिन्हित शिविर स्थलों का अवलोकन किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिविर स्थलों की भूमि का समुचित समतलीकरण समय रहते पूरा किया जाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने पार्किंग स्थलों की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने पर जोर दिया, ताकि मेले के दौरान यातायात का दबाव नियंत्रित रखा जा सके। उन्होंने कहा कि कुंभ मेला में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन की संभावना को देखते हुए यातायात प्रबंधन की विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाए। दक्षद्वीप क्षेत्र के निरीक्षण के दौरान मेलाधिकारी ने वहां स्थित घाटों की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि घाटों की सीढ़ियों, रेलिंग और प्रकाश व्यवस्था को मजबूत और सुरक्षित बनाया जाए। घाटों की नियमित सफाई और मरम्मत के लिए कार्ययोजना तैयार करने को भी कहा गया। उन्होंने कहा कि गंगा तट पर आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है, इसलिए किसी भी प्रकार की तकनीकी या संरचनात्मक कमी को तत्काल दूर किया जाए। सड़क और पुल निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए मेलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी प्रमुख मार्गों का सुदृढ़ीकरण समय से पूरा किया जाए। दक्षद्वीप पार्किंग से राष्ट्रीय राजमार्ग तक संपर्क मार्ग विकसित करने की योजना पर विशेष बल देते हुए उन्होंने कहा कि इससे मेले के दौरान वाहनों का दबाव कम होगा और यातायात सुचारु रूप से संचालित करने में सहूलियत होगी। कनखल क्षेत्र से वाहनों के निकास के लिए उपयुक्त पुलों और वैकल्पिक मार्गों की संभावनाओं पर विस्तृत अध्ययन कर शीघ्र रिपोर्ट प्रस्तुत करने और मौजूदा पुलों की सुरक्षा जांच व नियमित अनुरक्षण सुनिश्चित करने के लिए के निर्देश भी दिए गए।

मेलाधिकारी ने बिजली, पेयजल और स्वच्छता को लेकर प्रस्तावित व्यवस्थाओं की भी मौके पर समीक्षा की। स्वच्छता व्यवस्था को लेकर उन्होंने विशेष निर्देश देते हुए कहा कि मेला क्षेत्र में नियमित सफाई, कूड़ा निस्तारण और सार्वजनिक शौचालयों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इसके लिए संबंधित एजेंसियों के साथ समन्वित कार्ययोजना बनाई जाए। मेलाधिकारी ने कुंभ क्षेत्र के लिए आरक्षित भूमि को अतिक्रमणमुक्त बनाए रखने के निर्देश भी दिए। भूमि प्रबंधन को लेकर स्पष्ट कहा गया कि किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और समय रहते आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। मेलाधिकारी सोनिका ने कहा कि श्रद्धालुओं को सुरक्षित, सुगम और बेहतर सुविधाएं प्रदान करना मेला प्रशासन की प्रतिबद्धता है। कुंभ मेला 2027 को भव्य और सुव्यवस्थित रूप से आयोजित करने के लिए सभी विभाग समन्वय के साथ कार्य करें। इस काम में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। इस अवसर पर उप मेलाधिकारी मनजीत सिंह, सीओ ट्रैफिक विनोद सिंह सहित कुंभ मेले से जुड़े विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

चारधाम यात्रा: ऋषिकुल मैदान में 20 काउंटरों पर होंगे पंजीकरण

हरिद्वार । आगामी चारधाम यात्रा को सुव्यवस्थित और सुरक्षित बनाने के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। गुरुवार को कलक्ट्रैट में आयोजित बैठक में डीएम मयूर दीक्षित में 20 पंजीकरण काउंटर शिफ्टवार संचालित करने और सुबह 7 से शाम 7 बजे तक व्यवस्था सुचारु रखने के निर्देश दिए। गुरुवार को कलक्ट्रेट स्थित एनआईसी कक्ष,

रोशनाबाद में जिलाधिकारी मयूर दीक्षित की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विभिन्न विभागों की कार्ययोजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में तय किया गया कि श्रद्धालुओं का पंजीकरण पूर्व वर्षों की भांति ऋषिकुल मैदान में किया जाएगा। यहां जर्मन हैंगर युक्त अस्थायी पंजीकरण केंद्र बनाया जाएगा, जहां बिजली, पानी, पंखे और शौचालय जैसी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। डीएम ने 20 पंजीकरण काउंटर शिफ्टवार संचालित करने तथा सुबह 7 से शाम 7 बजे तक व्यवस्था सुचारु रखने के निर्देश दिए। पुलिस विभाग को होल्डिंग एरिया चिन्हित करने और भीड़ नियंत्रण के लिए डायवर्जन प्लान तैयार करने को कहा गया। एसपी सिटी अभय सिंह ने पुलिस तैयारियों की जानकारी दी। परिवहन विभाग को ट्रिप कार्ड/ग्रीन कार्ड संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु हेल्पडेस्क स्थापित करने के निर्देश मिले। नगर निगम को पंजीकरण केंद्र व होल्डिंग एरिया में मोबाइल टॉयलेट व सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया, जबकि स्वास्थ्य विभाग को चिकित्सा शिविर लगाने के निर्देश दिए गए। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को यात्रा मार्ग के कार्य समय से पूर्ण करने और पर्यटन विभाग को व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। डीएम ने सभी विभागों को समन्वय के साथ यात्रा को सफल बनाने पर जोर दिया। इस दौरान सीएमओ डॉ.आरके सिंह, सिटी मजिस्ट्रेट कुश्म चौहान,एसडीएम जितेंद्र कुमार सहित अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सम्पादकीय

देश की अर्थव्यवस्था में आया बदलाव

महंगाई देश के सबसे अहम आर्थिक संकेतकों में से एक है, जिसे आम लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सीधे महसूस करते हैं, जैसे घर का राशन, किराया और पेट्रोल-डीज़ल के खर्च में बढ़ोतरी से। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) इसी महंगाई को मापता है। यह उन चीज़ों और सेवाओं के दाम देखता है, जिनका इस्तेमाल आम परिवार रोज़ करता है। सरल शब्दों में, सीपीआई आम आदमी की ज़िंदगी का आईना है। यह बताता है कि थाली में खाने का खर्च कितना बढ़ा, घर का किराया कितना हुआ, और काम पर जाने के लिए ईंधन कितना महंगा हुआ। सीपीआई भले ही एक आंकड़ा लगता हो, लेकिन यह सरकार को यह समझने में मदद करता है कि लोगों पर महंगाई का असली असर क्या है। इसी आधार पर वेतन, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा से जुड़े फैसले किए जाते हैं, ताकि ज़रूरी चीज़ें आम लोगों की पहुंच में बनी रहें। भारतीय रिज़र्व बैंक भी ब्याज दर और महंगाई को नियंत्रित करने जैसे फैसलों के लिए सीपीआई आधारित महंगाई को ही सबसे मुख्य पैमाना मानता है। इसलिए जब सीपीआई ज़मीन की हकीकत सही तरीके से दिखाता है, तब सरकार और आरबीआई की नीतियाँ भी लोगों की असली परेशानियों के अनुसार बेहतर बन पाती हैं। महंगाई सिर्फ दाम बढ़ने का नाम नहीं है, बल्कि यह भी है कि दामों में बदलाव से घर के बजट पर कितना असर पड़ता है। इसलिए जितना ज़रूरी दामों को मापना है, उतना ही ज़रूरी यह भी है कि महंगाई का सूचकांक लोगों की आज की खर्च करने की आदतों को सही तरीके से दिखाए। इसी संदर्भ में भारत में सीपीआई के आधार वर्ष को 2012 से बदलकर 2024 किया जा रहा है। पिछली बार आधार बदले जाने के बाद देश की अर्थव्यवस्था में बहुत बदलाव आया है। शहरों की आबादी बढ़ी है, सेवाओं का क्षेत्र बढ़ा है, डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण खरीदारी का तरीका बदला है और घरों का खर्च अब कई नई चीजों पर होने लगा है। इसीलिए नया सीपीआई 2024 तैयार करने में 2023-24 के घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। समय के साथ लोगों की ज़रूरतें और खर्च बदलते हैं, इसलिए सीपीआई में अलग-अलग वस्तुओं और सेवाओं को दी जाने वाली अहमियत भी बदली गई है। जिन चीजों पर अब परिवार ज़्यादा खर्च करते हैं, उन्हें सीपीआई में ज़्यादा महत्व दिया गया है, इससे सीपीआई वही महंगाई दिखाता है, जो सच में आम परिवार के बजट को प्रभावित करती है। साथ ही, उपभोग की टोकरी (कंजम्पशन बास्केट) को भी बदला गया है, ताकि सेवाओं पर बढ़ते खर्च जैसे नए रुझान दिखाई दे सकें, जो बढ़ती आय और बदलती जीवनशैली की वजह से बढ़ रहे हैं। सीपीआई को मापने का तरीका अपडेट करना भी उतना ही ज़रूरी है, जितना यह तय करना कि उसमें क्या-क्या शामिल किया जाए। नया संशोधित सीपीआई अब अंतरराष्ट्रीय मानकों के ज्यादा करीब है, लेकिन इसमें भारत से जुड़ी खास बातें भी बनी हुई हैं। इससे भारत की महंगाई की तुलना दूसरे देशों से करना आसान हो जाता है।

विकसित भारत 2047 की ओर

पीढ़ियों से, भारत के श्रमिकों ने एक पुरानी और टुकड़ों में बंटी श्रम प्रणाली का बोझ उठाया है, जो अक्सर उनके वेतन, सुरक्षा और कार्यस्थल पर गरिमा की रक्षा करने में विफल रही है। असंगठित, संविदा और उभरते गिग क्षेत्रों के करोड़ों श्रमिक नीति-परिदृश्य में अदृश्य रहे हैं और बुनियादी सामाजिक सुरक्षा से वंचित रहे हैं। चार श्रम संहिताएँ इन ऐतिहासिक अन्यायों का सुधार करने के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित प्रयास का प्रतिनिधित्व करती हैं। लगभग तीन दर्जन अलग-अलग कानूनों को एक सुसंगत, एकल ढांचे में लाकर, ये संहिताएँ न्यायसंगत वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और उन लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करती हैं, जो लंबे समय से वंचित रहे हैं। वर्षों के परामर्श और बहस के बाद इनका कार्यान्वयन, श्रमिकों के अधिकारों को मजबूत करने तथा अधिक स्थिर और मानवतापूर्ण रोजगार वातावरण बनाने में निर्णायक क्षण का प्रतीक है। एक जिम्मेदार ट्रेड यूनियन संगठन के रूप में, भारतीय ट्रेड यूनियनों का राष्ट्रीय मोर्चा (एनएफआईटीयू), कामगारों की दीर्घकालिक भलाई, गरिमा और सामाजिक सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। मोर्चा दृढ़ता से मानता है कि 12 फरवरी को श्रम संहिताओं के खिलाफ हड़ताल में भाग लेना न तो आवश्यक है और न ही वर्तमान समय में श्रमिक वर्ग के सर्वोत्तम हित में है। श्रम संहिताएं कोई अचानक या एकतरफा हस्तक्षेप नहीं हैं। ये दो दशकों से अधिक समय तक चली सुधार प्रक्रिया का परिणाम हैं। 29 अलग-अलग श्रम कानूनों को चार व्यापक संहिताओं में समेकित करने की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी, ताकि अनुपालन को सरल बनाया जा सके, अस्पष्टता को कम किया जा सके तथा कार्य और रोजगार की बदलती वास्तविकताओं के अनुरूप भारत की श्रम रूपरेखा को आधुनिक बनाया जा सके। श्रम संहिताओं को पूरी तरह खारिज करना उन मौलिक लाभों की उपेक्षा करता है, जो वे श्रमिकों को प्रदान करने का प्रयास करती हैं। वेतन संहिता सार्वभौमिक न्यूनतम वेतन कवरेज और समय पर वेतन भुगतान सुनिश्चित करती है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में लंबे समय से मौजूद वेतन सुरक्षा के अंतर को दूर किया जा सकता है। सामाजिक सुरक्षा संहिता, पहली बार, असंगठित, संविदा, गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा की विधायी रूपरेखा तैयार करती है। इन श्रमिकों की संख्या लगभग 40 करोड़ है और पहले ये श्रमिक औपचारिक सुरक्षा व्यवस्था से बाहर थे। ये प्रावधान भारत में श्रमिकों के अधिकारों और सामाजिक सुरक्षा कवरेज का ऐतिहासिक विस्तार प्रस्तुत करते हैं।

गलत है वन्दे मातरम् को साम्प्रदायिक चश्मे से देखना

-अशोक 'प्रवृद्ध'

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने फरवरी 2026 में राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् के लिए नए प्रोटोकॉल जारी करते हुए सभी सरकारी कार्यक्रमों और विद्यालयों में राष्ट्रगान से पहले वन्दे मातरम् का गायन अनिवार्य कर दिया है। अब वन्दे मातरम् गीत के केवल पहले दो अंतरे नहीं, बल्कि सभी 6 अंतरे गाना अनिवार्य होगा। पूरे गीत की अवधि 3 मिनट 10 सेकंड निर्धारित की गई है। इसे गाते या बजाते समय सिनेमा हॉल को छोड़कर अन्य स्थलों पर सभी उपस्थित लोगों को सावधान की मुद्रा में खड़ा होना अनिवार्य है। वन्दे मातरम् के नए नियमों के तहत इसके अपमान पर सजा के प्रावधान भी किये गए हैं। गृह मंत्रालय के हालिया प्रोटोकॉल के अनुसार राष्ट्रगीत का अपमान अब कानूनन दंडनीय है। यदि कोई व्यक्ति गीत के गायन में जानबूझकर बाधा डालता है या इसका अपमान करता है, तो उसे राष्ट्रीय सम्मान के अपमान का निवारण अधिनियम, 1971 के तहत 3 वर्ष तक की सजा या जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं। क़ानूनी विशेषज्ञों के अनुसार इसे अब राष्ट्रगान के समान कानूनी दर्जा दिया जा रहा है। नियमों के अनुसार गीत बजते समय सावधान की मुद्रा में खड़ा होना अनिवार्य है। केवल शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को इसमें छूट दी गई है।

उल्लेखनीय है कि वन्दे मातरम् के गायन को अनिवार्य करने का विषय भारत में लंबे समय से एक चर्चा का केंद्र रहा है। इसके पक्ष में मुख्य तर्क यह है कि यह गीत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक रहा है और इसका सामूहिक गायन नागरिकों में एकता और देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ कर सकता है। यद्यपि इस पर अलग-अलग दृष्टिकोण भी मौजूद हैं। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इसकी संवैधानिक स्थिति के बारे में पूर्व में स्पष्ट किया है कि संविधान के अनुच्छेद 51 (मौलिक कर्तव्य) में केवल राष्ट्रगान अर्थात जन गण मन और ध्वज का उल्लेख है, राष्ट्रगीत का नहीं। संविधान में राष्ट्रगीत को अनिवार्य रूप से गाने का कोई मौलिक कर्तव्य नहीं जोड़ा गया है, जबकि राष्ट्रगान का सम्मान करना अनिवार्य है। हालांकि केंद्र के नए नियमों के बाद इसे राष्ट्रीय सम्मान के अपमान का निवारण अधिनियम, 1971 के तहत संरक्षण देने की योजना है। समर्थकों का मानना है कि विद्यालय और सरकारी संस्थानों में इसे अनिवार्य करने से युवा पीढ़ी अपनी जड़ों और बलिदान के इतिहास से जुड़ी रहेगी। जहां भाजपा और केंद्र सरकार का मानना है कि यह 1937 में हटाए गए हिस्सों को पुनर्स्थापित करने और राष्ट्रीय गौरव को वापस लाने का कदम है। वहीं विरोधी पक्ष कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसे इतिहास बदलने की कोशिश और चुनावी राजनीति से प्रेरित बताया है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीयत उलेमा-ए-हिंद जैसे मुस्लिम संगठनों ने इसे धार्मिक स्वतंत्रता पर हमला बताते हुए कोर्ट में चुनौती देने की बात कही है। इसमें कोई शक नहीं कि वन्दे मातरम् का गौरवशाली इतिहास रहा है और इस गीत का सफर भारतीय राष्ट्रवाद की कहानी है। इसे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1870 के दशक में लिखा था और 1882 में उनके उपन्यास आनंदमठ में शामिल किया गया। रवींद्रनाथ टैगोर ने पहली बार 1896 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में इसे लयबद्ध कर गाया था। 24 जनवरी 1950 को प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने घोषणा की थी कि वन्दे मातरम् का स्थान अर्थात संवैधानिक दर्जा राष्ट्रगान जन गण मन के बराबर होगा। भारत विभाजन के पूर्व 1937 में कुछ वर्गों की आपत्तियों के बाद कांग्रेस कार्यसमिति ने केवल पहले दो अंतरे गाने का निर्णय लिया था, क्योंकि उनमें मातृभूमि की प्राकृतिक सुंदरता और पोषण क्षमता का वर्णन था, जबकि बाद के अंतरे धार्मिक रूप से देखे जा रहे थे। मूल रूप से, तीसरे से छठे छंद में भारत माता की तुलना देवी दुर्गा और शक्ति के रूपों से की गई है, जो ऐतिहासिक रूप से चर्चा का विषय रहे। तीसरा छंद है-त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी... ।

अर्थात- माँ, तुम ही दस शस्त्रों को धारण करने वाली दुर्गा हो। तुम ही कमल के फूलों के बीच विहार करने वाली देवी लक्ष्मी (कमला) हो और तुम ही ज्ञान की देवी सरस्वती हो।

चौथा छंद- वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्, नमामि कमलां अमलां अतुलां... ।

अर्थात- मैं आपको नमन करता हूँ, जो विद्या प्रदान करने वाली वाणी (सरस्वती) हैं। मैं उस लक्ष्मी को नमन करता हूँ जो शुद्ध और अतुलनीय है।

पांचवां और छठा छंद में देश की करोड़ों भुजाओं की शक्ति और शत्रुओं के संहारक रूप का वर्णन है, जो स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत था।

वर्तमान में बदलाव के उद्देश्य के संबंध में सरकार का तर्क है कि 1937 में गीत के जो 4 अंतरे हटाए गए थे, वे औपनिवेशिक तुष्टिकरण का हिस्सा थे। अब सभी 6 अंतरे गाना पूर्ण राष्ट्रवाद और भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान का प्रतीक माना जा सकता है। मुस्लिम संगठनों और कुछ ईसाई समुदायों का तर्क रहा है कि उनके धर्म में ईश्वर के अलावा किसी अन्य की प्रतिमा या देवी के रूप में पूजा करना वर्जित है। चूँकि इन छंदों में राष्ट्र की तुलना सीधे हिन्दू देवी-देवताओं से की गई है, इसलिए वे इसे अपनी धार्मिक मान्यताओं के विरुद्ध मानते हैं। संस्कृति मंत्रालय और समर्थकों का मानना है कि यह केवल धार्मिक चित्रण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। उनका तर्क है कि जिस तरह हम देश को माता मानते हैं, उसी तरह उसे शक्ति और ज्ञान के विभिन्न प्रतीकों के साथ देखना भारतीय परंपरा का हिस्सा है। वन्दे मातरम् के सभी 6 छंदों को अनिवार्य किए जाने के फैसले पर राजनीतिक और सामाजिक गलियारों में तीखी प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। सत्ता पक्ष इसे ऐतिहासिक सुधार और सांस्कृतिक न्याय कह रहा है, वहीं विपक्ष इसे संविधान सभा के मूल समझौते का उल्लंघन बता रहा है। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि 1937 में हुआ समझौता देश की विविधता को ध्यान में रखकर किया गया था। सरकार इतिहास को फिर से लिखने और जनता का ध्यान महंगाई, बेरोजगारी जैसे असल मुद्दों से भटकाने के लिए यह कदम उठा रही है। सत्ता पक्ष इन आपत्तियों को खारिज कर रहा है। सरकार का कहना है कि यह गीत स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा है। यदि कोई वंदे मातरम् गाने में अपमान महसूस करता है, तो उसकी राष्ट्रनिष्ठा पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। भाजपा प्रवक्ताओं का तर्क है कि वन्दे मातरम् कोई धार्मिक भजन नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय प्रतीक है। इसे केवल सांप्रदायिक चश्मे से देखना गलत है। वन्दे मातरम् से जुड़ी कानूनी चुनौतियों में सर्वोच्च न्यायालय के तीन ऐतिहासिक फैसले सबसे महत्वपूर्ण नजीर माने जाते हैं। बिजोय इमैनुएल बनाम केरल राज्य (1986) का मामला, जिसे जेहोवा विटनेस केस के नाम से जाना जाता है, में न्यायालय ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति राष्ट्रगान (या गीत) के सम्मान में चुपचाप खड़ा रहता है लेकिन उसे गाता नहीं है, तो इसे अपमान नहीं माना जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ङ) के तहत मौन रहने का अधिकार भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा है। तिरंगे के मान-सम्मान से जुड़े नवीन जिंदल बनाम भारत संघ (2004) में भी न्यायालय ने माना कि राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना एक नागरिक का मौलिक अधिकार और कर्तव्य दोनों है। इस फैसले का उपयोग करते हुए सरकार के समर्थक यह तर्क दे रहे हैं कि राष्ट्रगीत का गायन संवैधानिक देशभक्ति का हिस्सा है। एक याचिका अश्विनी उपाध्याय बनाम भारत संघ (2017) में याचिकाकर्ता द्वारा वन्दे मातरम् को राष्ट्रगान के समान दर्जा देने और विद्यालयों में अनिवार्य करने की मांग की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने इसे अनिवार्य करने से इन्कार कर दिया था। जस्टिस दीपक मिश्रा की बेंच ने कहा था कि संविधान के अनुच्छेद 51 में केवल राष्ट्रगान और ध्वज का जिक्र है, राष्ट्रगीत का नहीं। कोर्ट ने तब स्पष्ट किया था कि राष्ट्रगीत को लेकर कोई कानूनी बाध्यता नहीं है। लेकिन अब गृह मंत्रालय ने 2026 के नए दिशानिर्देश जारी कर दिए हैं, इसलिए पिछली नजीरों और नए सरकारी आदेशों के बीच संवैधानिक टकराव होना तय है। सरकार इसे राष्ट्रीय सम्मान के अपमान का निवारण अधिनियम के दायरे में लाकर पुरानी नजीरों को बेअसर करने की कोशिश कर सकती है। यद्यपि फिलहाल, गृह मंत्रालय के निर्देश पूरे देश में सरकारी संस्थानों के लिए प्रभावी हैं। तथापि कई राज्यों, विशेषकर विपक्ष शासित राज्यों में इसे लागू करने को लेकर केंद्र और राज्य के बीच टकराव की स्थिति बन रही है। फरवरी 2026 में जारी केंद्र सरकार के नए प्रोटोकॉल के बाद भारत के विभिन्न राज्यों में एक स्पष्ट विभाजन देखा जा रहा है। राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन शासित राज्यों ने जहां केंद्र के निर्देशों को तुरंत प्रभावी कर दिया है, वहीं गैरभाजपा शासित राज्यों ने इसे राज्यों के अधिकारों और विविधता पर हमला बताया है। अब देखना है कि यह मामला अंततः क्या नया गुल खिलाता है?

कांवड़ियों और स्थानीय लोगों के बीच मारपीट सोशल मीडिया पर वायरल

हरिद्वार । कनखल स्थित दक्षेश्वर महादेव मंदिर के पास हरियाणा से आए कांवड़ियों और स्थानीय युवकों के बीच किसी बात पर हुई कहासुनी मारपीट में बदल गई। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते ही पुलिस महकमे में हलचल मच गई है। जानकारी के अनुसार, कुछ कांवड़िये दर्शन करने पहुंचे थे। तभी किसी बात को लेकर स्थानीय युवकों से उनकी तकरार हुई। बहस बढ़ने पर हाथापाई शुरू हो गई। मौके पर मौजूद लोगों ने बीच-बचाव का प्रयास किया, लेकिन स्थिति कुछ समय के लिए नियंत्रण से बाहर नजर आई। इस दौरान श्रद्धालुओं और दुकानदारों में दहशत का माहौल बन गया और भीड़ बढ़ने से अफरा-तफरी मची। कोतवाली प्रभारी देवेंद्र सिंह रावत ने बताया कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो की जांच की जा रही है। आरोपियों की पहचान कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

स्वामी श्रद्धानंद भारतीय नवजागरण के पुरोधा: शास्त्री

हरिद्वार । उत्तराखंड संस्कृत विवि के पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश चंद्र शास्त्री ने कहा है कि स्वामी श्रद्धानंद भारतीय नवजागरण के पुरोधा रहे। उन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धांतों को आगे बढ़ाकर समाज को नई दिशा दिखाई। गुरुकुल कांगड़ी विवि में रविवार को स्वामी श्रद्धानंद की 171वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में वे बतौर मुख्य वक्ता पहुंचे। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, वैदिक शिक्षा के पुनरुत्थान और सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए उल्लेखनीय काम किए। कुलपति प्रो. प्रतिभा मेहता लूथरा ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति विदेशी प्रणाली की तुलना में अधिक संस्कारयुक्त है। कुलसचिव प्रो. सत्यदेव निगमालंकार ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद का जीवन राष्ट्रसेवा को समर्पित रहा। डॉ. हिमांशु पंडित ने संचालन किया, जबकि डॉ. दीनदयाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बंदूक से फायर कर रील बनाने वाला गिरफ्तार

हरिद्वार । सिडकुल थाना पुलिस ने दो नाली बंदूक से फायर कर रील बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मंजीत सिंह पुत्र आलम सिंह निवासी टीरा टोंगिया सिडकुल के रूप में हुई। पुलिस के अनुसार, वीडियो वायरल होते ही आरोपी की तलाश शुरू कर दी गई थी। गश्त के दौरान पतंजलि विवि से आगे जंगल क्षेत्र से आरोपी को पकड़ा गया। गिरफ्तारी के समय भी वह दो नाली बंदूक लेकर घूम रहा था। उससे 12 बोर के तीन जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए। थाना प्रभारी नितेश शर्मा ने बताया कि आरोपी के खिलाफ आर्म्स ऐक्ट में मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार, अवैध हथियार के साथ रील बनाना और सोशल मीडिया पर प्रदर्शन करना गंभीर अपराध है, ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई होगी। सिडकुल में मोबाइल झपटमार पकड़ा हरिद्वार(आरएनएस)। सिडकुल क्षेत्र में निजी कंपनी के पास कर्मचारियों से मोबाइल झपटकर फरार हुए युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार, सत्येंद्र पाल और विपिन शर्मा से एक स्कूटर सवार युवक मोबाइल छीनकर भागा था। सत्येंद्र की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर पुलिस टीम गठित की गई। जांच के दौरान पुलिस ने सिडकुल क्षेत्र से ही आरोपी को दबोचा। आरोपी की पहचान तुषार पुत्र पृथ्वी सिंह निवासी आवास विकास कॉलोनी बिजनौर के रूप में हुई।

शांतिकुंज और देवसंस्कृति विवि में चतुग्रही योग पर पूजा

हरिद्वार । देव संस्कृति विवि परिसर स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में चतुग्रही योग पर 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के भाव के साथ पूजा-अर्चना की गई। गायत्री परिवार के प्रतिनिधि के रूप में प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या और महिला मंडल प्रमुख शैफाली पंड्या ने महादेव का पूजन किया। जाने-माने पार्श्व गायक हिमेश रेशमिया ने भी सपरिवार भाग लिया। उन्होंने वैदिक विधि-विधान और मंत्रोच्चार के बीच भगवान शिव का अभिषेक किया। ज्योतिषीय गणना के अनुसार, कुंभ राशि में सूर्य, बुध, शुक्र और राहु के एक साथ स्थित होने से चतुग्रही योग बनता है। ज्योतिष शास्त्र में इसे प्रभावशाली संयोग माना जाता है। डॉ. प्रणव पंड्या और शैलदीदी ने विशेष रुद्राभिषेक किया। इसके बाद शांतिकुंज और देवसंस्कृति विवि ने नशा मुक्ति और स्वच्छता के संदेश के साथ रैली निकाली। यह रैली भूपतवाला, पावनधाम और रानीपुर होकर वापस श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा की समाधि स्थल पर पहुंची।

डंपर की टक्कर से महिला की मौत पर मुकदमा

हरिद्वार । हरिद्वार-लक्सर मार्ग पर बीते शुक्रवार की शाम डंपर की टक्कर से घायल महिला ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। जबकि, पति का इलाज जारी है। अब इस मामले में पथरी पुलिस ने आरोपी चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, फेरूपुर निवासी अर्जुन पुत्र विनोद ने बताया कि उनकी मां कुसुम और पिता विनोद पतंजलि कंपनी में काम करके शुक्रवार शाम करीब सात बजे स्कूटर से घर लौट रहे थे। तभी पदार्था रविदास मंदिर के पास तेज रफ्तार डंपर ने पीछे से टक्कर मारी और दोनों सड़क पर गिर गए। एक अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मां की मौत हो गई। जबकि, पिता का इलाज चल रहा है।

दीक्षांत केवल डिग्री नहीं, आत्मबोध से राष्ट्रबोध की यात्रा: राज्यपाल

-राज्यपाल ने कोर विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में किया प्रतिभाग
-युवाओं से रोजगार सृजक बनने और नवाचार अपनाने का किया आह्वान

देहरादून । राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने कोर विश्वविद्यालय, रुड़की के दूसरे दीक्षांत समारोह में प्रतिभाग कर विद्यार्थियों को डिग्री और मेडल प्रदान किए। इस अवसर पर दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि दीक्षांत केवल डिग्री प्राप्त करने का अवसर नहीं है, बल्कि यह आत्मबोध से राष्ट्रबोध की ओर बढ़ने की जागरूक यात्रा का आरंभ है। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को नौकरी खोजने के बजाय रोजगार सृजक बनने के लिए प्रेरित किया और स्टार्टअप एवं उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि दीक्षांत के बाद विद्यार्थियों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। आज से वे केवल विद्यार्थी नहीं, बल्कि राष्ट्र के निर्माता हैं। 'राष्ट्र सर्वोपरि' के मंत्र को जीवन का आधार बनाते हुए उन्होंने कहा कि विकसित भारत का मार्ग सरकारी योजनाओं से अधिक जागरूक एवं प्रतिबद्ध युवाओं के माध्यम से प्रशस्त होगा। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने स्वप्नों में भी राष्ट्र को सर्वोपरि रखें और अपने कर्म, चरित्र एवं संकल्प से भारत का गौरव बढ़ाएँ।

राज्यपाल ने कहा कि आज का युग तकनीक और नवाचार का युग है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग, स्पेस टेक्नोलॉजी, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर एवं नैनो टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में भारत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में युवाओं को परंपरा और आधुनिकता के समन्वय के साथ आगे बढ़ना होगा। उन्होंने भारतीय सभ्यता, वेद-पुराणों और आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि तकनीकी दक्षता के साथ चरित्र निर्माण भी उतना ही आवश्यक है।

राज्यपाल ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की सराहना करते हुए शोध, नवाचार, उद्योगों से एमओयू एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों, विशेषकर स्वर्ण पदक विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

दीक्षांत समारोह में सेठ रोशन लाल जैन ट्रॉफी तीन विद्यार्थियों आयुषी पंवार (बी. कॉम ऑनर्स, 2022-25) को विश्वविद्यालय स्तर पर उच्चतम 9.9 सीजीपीए प्राप्त करने के लिए, डोना चौहान (डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग, 2023-25) को 9.16 सीजीपीए हासिल करने के लिए और हनी चौधरी (एमसीए, 2023-25) को 9.5 सीजीपीए हासिल करने के लिए दी गई। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रार, डॉ. अजय शर्मा ने की। ग्लोबल टेलीकॉम एंड एजुकेशन एसोसिएशन के चेयरमैन, प्रो. एन. के. गोयल, विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट जे.सी. जैन, वाइस प्रेसिडेंट डॉ. श्रेयांश जैन, प्रो-वाइस चांसलर डॉ. चिन्नेयान रामासुब्रमण्यम, फैकल्टी मेंबर्स और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

देहरादून में विस्थापित दंपति को 15 साल बाद मिली अपनी जमीन

देहरादून । जिला प्रशासन देहरादून की तत्पर एवं प्रभावी कार्यवाही के फलस्वरूप ग्राम अटक फार्म, परगना पछवादून, तहसील विकासनगर में 15 वर्षों से आवंटित भूमि पर विधिवत कब्जा दिलाया गया। कब्जा प्राप्त होने के उपरांत लाभार्थी महिला ने अपने भाई के साथ जिलाधिकारी देहरादून का आभार व्यक्त किया। प्रकरण अटकफार्म, सेलाकुई, विकासनगर स्थित टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड (टिहरी बांध परियोजना) के अंतर्गत विस्थापित परिवारों को आवंटित आवासीय भूखण्डों से संबंधित है। शिकायतकर्ता सुमेरचंद एवं अन्य को आवंटित आवासीय भूखण्ड संख्या-29 पर अवैध कब्जे की शिकायत प्राप्त होने पर जिलाधिकारी के निर्देशानुसार त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की गई। जमीन कब्जे के जंगलराज पर जिला प्रशासन का न्याय का प्रहार करते हुए टिहरी बांध परियोजना अन्तर्गत विस्थापित परिवार को आवासीय भूखंड पर कब्जा दिला दिया है। जहां निम्न मध्यम वर्ग के पीड़ित विस्थापित पहाड़ी दम्पति की आवासीय भूमि पर कब्जा कर अवैध निर्माण किया जा रहा था। जिला प्रशासन ने विस्थापित दम्पति को उनका हक दिलाते हुए वर्षों से अतिक्रमित भूमि पर कब्जा दिला दिया है। जिस पर दम्पति जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करने पंहुची। जिलाधिकारी के निर्देशों के अनुपालन में उप जिलाधिकारी द्वारा संयुक्त जांच टीम गठित की गई। जांच टीम में तहसील विकासनगर के सर्वे लेखपाल, सर्व कानूनगो, राजस्व उपनिरीक्षक (पुनर्वास), राजस्व निरीक्षक (पुनर्वास) तथा सहायक अभियंता (पुनर्वास) सम्मिलित रहे।

टीम द्वारा पुनर्वास स्थल अटकफार्म में स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान भूखण्ड संख्या-15, 16, 17, 27, 28 एवं 29 का टिहरी बांध परियोजना द्वारा स्वीकृत नक्शों एवं राजस्व अभिलेखों से मिलान किया गया। मिलान उपरांत पाया गया कि उक्त आवंटित भूखण्ड खसरा संख्या 301, 302 एवं 303 के भाग हैं, जिन्हें टिहरी बांध परियोजना से विस्थापित परिवारों के पुनर्वास हेतु क्रय किया गया था। संयुक्त जांच में यह तथ्य प्रकाश में आया कि स्वर्गीय कुन्दन लाल जोशी के वारिसान द्वारा उक्त भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर गन्ने की खेती की जा रही थी। प्रकरण की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को अवैध कब्जा तत्काल हटवाने के निर्देश दिए गए। जिला प्रशासन की निगरानी में खसरा संख्या 301, 302 एवं 303 से अवैध कब्जा हटवाकर आवंटित भूखण्ड संख्या-29 सहित संबंधित भूखण्डों पर विधिसम्मत रूप से शिकायतकर्ता सुमेरचन्द्र एवं अन्य लाभार्थियों को कब्जा दिलाया गया। भूमि पर वैध अधिकार प्राप्त होने उपरांत लाभार्थी दंपति ने जिलाधिकारी से मुलाकात कर मा0 मुख्यमंत्री एंव जिला प्रशासन का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि वर्षों से लंबित समस्या का समाधान प्रशासन की सक्रिय पहल से संभव हो सका। जिलाधिकारी ने कहा कि पात्र लाभार्थियों के अधिकारों की रक्षा हेतु प्रशासन पूर्णत: प्रतिबद्ध है भूमि कब्जाने व भू-माफियाओं के विरूद्ध जिला प्रशासन के सख्त कार्यवाही जारी रहेगी।

सावरकर का शक्ति और शास्त्र के संगम का अद्वितीय राष्ट्रवाद

-अशोक 'प्रवृद्ध'

विनायक दामोदर सावरकर (28 मई 1883- 26 फरवरी 1966) भारतीय इतिहास के उन विरल व्यक्तित्वों में से हैं, जिन्हें जानना, समझना जितना जटिल है, उतना ही आवश्यक भी। राष्ट्र के लिए तो यह और भी आवश्यक हो जाता है। सावरकर केवल एक क्रांतिकारी ही नहीं, वरन एक भविष्यदृष्टा, तर्कशास्त्री, समाज सुधारक और प्रखर कवि भी थे। उनके राष्ट्र प्रेम का फलक इतना विस्तृत है कि वह जेल की कोठरी से लेकर आधुनिक सैनिकीकरण की नीतियों तक फैला हुआ है। वीर सावरकर एक निश्चित सांचे में ढलने वाले व्यक्तित्व नही थे। उनके राष्ट्र प्रेम का आधार कोई भावुकता मात्र नहीं, बल्कि एक कठोर बौद्धिक यथार्थवाद था। उनके जीवन के तीन प्रमुख आयाम उन्हें भारतीय चिंतन की मुख्यधारा में अद्वितीय स्थान दिलाते हैं। जहां उस दौर की मुख्यधारा की राजनीति याचिकाओं और क्रमिक सुधारों में विश्वास रखती थी, वहीं सावरकर ने सशस्त्र क्रांति और अजेय संकल्प के बल पर अभिनव भारत के माध्यम से पूर्ण स्वतंत्रता का शंखनाद किया। 1857 के संघर्ष को गद्दर के कलंक से निकालकर स्वतंत्रता समर का सम्मान दिलाना उनकी महानतम ऐतिहासिक देन थी। सेलुलर जेल की दीवारों पर कांटों से कविताएं लिखना और कोल्हू के बैल की तरह पिसते हुए भी हार न मानना, उनके उसी अजेय संकल्प का प्रमाण था, जिसे उन्होंने अपनी कविता में अनादि और अवध्य कहा था। सावरकर के राष्ट्र प्रेम का सबसे क्रांतिकारी पक्ष रुढियों पर प्रहार और उनके समाज सुधार के कार्य थे। वे जानते थे कि एक खंडित और छुआछूत में बंटा समाज कभी एक अखंड राष्ट्र नहीं बन सकता। रत्नागिरी में उन्होंने सप्त बंडियों अर्थात सात बेड़ियों को तोड़कर जो कार्य किया, वह उनके विज्ञानवादी होने का प्रमाण था। वैदिक, पौराणिक प्रसंग गोमहिमा से भरे होने के बावजूद भारतीय परंपरा के विपरीत उनका यह कहना कि गाय एक उपयोगी पशु है, भगवान नहीं, उनके तर्कसंगत राष्ट्रवाद को दर्शाता है। वे भारतीय समाज को प्राचीन रूढ़ियों से निकाल कर आधुनिक विज्ञान और औद्योगिक युग में ले जाना चाहते थे। सावरकर शायद पहले नेता थे, जिन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सैनिकीकरण की आवश्यकता को पहचाना। उनका नारा राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण केवल एक वर्ग विशेष के लिए नहीं, बल्कि भारत की सामरिक शक्ति को बढ़ाने का एक ब्लूप्रिंट था। उनका मानना था कि अहिंसा केवल तभी शोभा देती है जब आपके पास प्रहार करने की शक्ति हो।

आज की आधुनिक रक्षा नीतियों में सावरकर के उसी शक्ति संतुलन के विचार की झलक मिलती है। सावरकर का राष्ट्र प्रेम स्व की पहचान का प्रेम था। उन्होंने सिखाया कि राष्ट्र केवल मिट्टी का ढेर नहीं, बल्कि उस पर रहने वाले लोगों का साहस, उनकी संस्कृति और उनकी वैज्ञानिक चेतना है। वे एक ऐसे शक्ति साधक थे, जिन्होंने भारतीय राजनीति को यथार्थवाद का दर्पण दिखाया। मातृभूमि की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। यही सावरकर के जीवन का सार और संदेश है। अंडमान की काल कोठरी में राष्ट्रवाद का व्याकरण लिखने वाले वीर सावरकर का राष्ट्रवाद केवल नारों का नहीं, बल्कि निशान और निर्माण का राष्ट्रवाद था। उन्होंने हमें सिखाया कि जब तक समाज जातिवाद की बेड़ियों में जकड़ा रहेगा, तब तक अखंड भारत का स्वप्न अधूरा रहेगा। उन्होंने नारा दिया- हिन्दुओं का सैनिकीकरण करो, क्योंकि वे जानते थे कि कायरों की शांति को दुनिया कायरता कहती है, जबकि शक्तिशालियों की शांति को दुनिया सम्मान देती है। उनके विज्ञाननिष्ठ और सशक्त भारत के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणा देने वाले हैं। सावरकर राष्ट्रवाद, क्रांति व तर्क के संगम थे। सावरकर का राष्ट्रवाद भी अद्वितीय है, क्योंकि वह अतीत के गौरव और भविष्य की आधुनिकता को जोड़ता है। जहां एक ओर वे हिन्दू पद पादशाही के माध्यम से इतिहास को पुनर्जीवित करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे अष्टाक्षरी लिपि में सुधार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वकालत करते हैं। उनका राष्ट्रवाद केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि वह हिन्दू समाज के भीतर की बुराइयों को समाप्त कर उसे वैश्विक शक्ति बनाने का एक व्यापक दर्शन था। उनके विचार आज की आत्मनिर्भर भारत और मजबूत रक्षा नीति की नींव में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। सावरकर के सैनिकीकरण के विचार केवल कागजी नहीं थे। ऐतिहासिक विवरणियों के अनुसार 22 जून 1940 को सुभाष चंद्र बोस ने सावरकर से उनके मुंबई स्थित निवास सावरकर सदन में मुलाकात की थी। सावरकर ने ही बोस को सलाह दी थी कि वे देश छोड़कर बाहर जाएं और द्वितीय विश्व युद्ध में बंदी बनाए गए भारतीय सैनिकों को संगठित कर एक बाहरी सेना (आजाद हिन्द फौज) तैयार करें। यह सावरकर की दूरदर्शिता ही थी कि जब आजाद हिन्द फौज ने भारत की सीमा पर दस्तक दी, तो ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिल गई। सावरकर का राष्ट्र प्रेम केवल राजनीति तक सीमित नहीं था, वे हिन्दी और मराठी भाषा को विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त करना चाहते थे। आज हिन्दी की मुख्यधारा में वृहत रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द - दिग्दर्शक, नगरपालिका, महापौर, प्राचार्य आदि शब्द प्रयोग सावरकर की ही देन हैं। उन्होंने भाषा को राष्ट्र की आत्मा माना और इसके शुद्धिकरण के लिए व्यापक शब्दकोश तैयार किया। सावरकर की काला पानी की जेल यात्रा केवल शारीरिक कष्ट की कहानी नहीं है, बल्कि वह मानवीय इच्छाशक्ति की पराकाष्ठा है। सेलुलर जेल में जब उन्हें कागज नहीं दिया गया, तो उन्होंने पत्थर के टुकड़ों और कीलों से जेल की दीवारों पर 6000 से अधिक पंक्तियां लिखीं। उन्होंने उन पंक्तियों को कंठस्थ किया और जब वे रिहा हुए, तो उन्होंने उन्हें पुनः कागजों पर उतारा। यह विश्व साहित्य के इतिहास में एक दुर्लभ उदाहरण है, जहां एक बंदी ने अपनी स्मृतियों में पूरी किताब संजो कर रखी थी। सावरकर ने कहा था, धर्मग्रंथों को अलमारी में बंद कर दो और विज्ञान की प्रयोगशालाओं को खोलो। उन्होंने परमाणु शक्ति और आधुनिक तकनीक का समर्थन किया। उनका मानना था कि राष्ट्र की रक्षा केवल पूजा-पाठ से नहीं, बल्कि आधुनिक हथियारों और वैज्ञानिक सोच से होगी। उन्होंने हिन्दुत्व को एक गतिशील पहचान माना, जो समय के साथ बदलने की क्षमता रखती है।

वीर सावरकर को किसी एक विचारधारा की सीमा में बांधना कठिन है। वे एक ऐसे क्रांतिकारी तर्कशास्त्री थे, जिन्होंने यह सिखाया कि राष्ट्र भक्ति का अर्थ केवल झंडा फहराना नहीं, बल्कि समाज की कुरीतियों को जलाना और राष्ट्र को सैन्य व वैज्ञानिक रूप से इतना सक्षम बनाना है कि दुनिया उसकी ओर आंख उठाकर न देख सके। उनका जीवन एक जलती हुई मशाल की तरह था, जिसने न केवल स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि स्वतंत्र भारत को सुरक्षित रखने का मंत्र भी दिया। विनायक दामोदर सावरकर का राष्ट्र प्रेम उनके जीवन के हर पहलू क्रांतिकारी गतिविधियों, वैचारिक लेखन और सामाजिक सुधारों में झलकता है। उनके लिए राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत थी। उन्होंने मित्र मेला और अभिनव भारत जैसी गुप्त संस्थाएं बनाईं ताकि युवाओं को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह के लिए प्रेरित किया जा सके। अपनी मातृभूमि के लिए उन्होंने सेलुलर जेल (काला पानी) में वर्षों तक अमानवीय यातनाएं सहीं। सावरकर ने हिन्दुत्व को एक व्यापक राष्ट्रीय पहचान के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार जो भी भारत को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है, वह इस राष्ट्र का अटूट हिस्सा है। उन्होंने हिन्दू पद पादशाही जैसे ग्रंथों के माध्यम से भारतीय गौरव को पुनर्जीवित किया। वे विभाजन के घोर विरोधी थे और अखंड भारत की परिकल्पना में विश्वास रखते थे, जहां सिंधु नदी से समुद्र तक की भूमि एक सूत्र में पिरोई हो। उनके राष्ट्र प्रेम में केवल स्वतंत्रता ही नहीं, बल्कि एक मजबूत और संगठित समाज भी शामिल था। उन्होंने रत्नागिरि में नजरबंदी के दौरान जातिवाद और छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया ताकि राष्ट्र आंतरिक रूप से शक्तिशाली बने। उन्होंने 1857 का स्वातंत्र्य समर पुस्तक लिखकर अंग्रेजों के उस विमर्श को चुनौती दी, जिसमें इसे केवल एक सैन्य विद्रोह कहा गया था। इस कृति ने भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों को भी राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया। सावरकर का मानना था कि राष्ट्र की रक्षा के लिए शास्त्र के साथ शस्त्र का ज्ञान भी आवश्यक है, इसीलिए उन्होंने राजनीति के हिन्दूकर और हिन्दुओं के सैनिकीकरण का नारा दिया। कहा जाता है कि उनके इन्हीं क्रन्तिकारी विचारों और अदम्य साहस के कारण वीर की उपाधि उन्हें जनता ने दी थी। कुछ विवरणियों के अनुसार प्रहलाद केशव अत्रे ने उन्हें एक सार्वजनिक सभा में इस उपाधि से संबोधित किया था, जिसके बाद वे वीर सावरकर के नाम से विख्यात हुए। सावरकर का व्यक्तित्व विरोधाभासों से भरा रहा है- एक तरफ वे एक क्रांतिकारी थे, तो दूसरी तरफ एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक। ऐसे महान क्रांतिकारी सावरकर का अंत भी उनके जीवन की तरह ही गरिमापूर्ण था। उन्होंने आत्मार्पण अर्थात स्वेच्छा से देह त्याग का मार्ग चुना। 1 फ़रवरी 1966 को सावरकर ने घोषणा की कि उनका जीवन उद्देश्य पूर्ण हो चुका है और अब वे भोजन, जल और दवाओं का त्याग अर्थात प्रायोपवेशन कर रहे हैं। उन्होंने इसे आत्महत्या नहीं, बल्कि आत्मार्पण कहा, क्योंकि यह निराशा में नहीं वरन कर्तव्य पूर्ति के बोध के साथ लिया गया निर्णय था। उन्होंने अपने लेख आत्महत्या की आत्मार्पण में तर्क दिया कि जब शरीर काम करना बंद कर दे और राष्ट्र के लिए व्यक्ति की उपयोगिता समाप्त हो जाए, तो मृत्यु की प्रतीक्षा करने के बजाय उसे गरिमा के साथ गले लगाना श्रेष्ठ है। लगभग 26 दिनों के उपवास के बाद 26 फ़रवरी 1966 को सुबह 11:10 बजे उन्होंने मुंबई के सावरकर सदन में अंतिम सांस ली।

भाजपा को लेने के देन पड़ेगे

क्या भाजपा राहुल गांधी की लोकसभा की सदस्यता समाप्त कराने और जीवन भर चुनाव लड़ने से रोकेगी? ऐसे ही क्या प्रियंका गाधी वाड्रा की भी सदस्यता खत्म कराने की पहल होगी? भाजपा की ओर से पहले राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव लाने की चर्चा थी लेकिन उसको पता है कि उसमें पार्टी को शामिल होना होगा। यह भी सवाल था कि अगर सरकार के नीतिगत फैसलों की आलोचना के लिए विपक्ष के किसी सदस्य के खिलाफ विशेषाधिकार प्रस्ताव लाया जाने लगे तो फिर यह बात बहुत दूर तक चली जाएगी। तभी पार्टी के एक सांसद निशिकांत दुबे की ओर से सबस्टेंसिव मोशन पेश कराया गया। ध्यान रहे पहले सबस्टेंसिव मोशन पर यूपीए की पहली सरकार ने कई सांसदों की सदस्यता समाप्त की थी। उनके ऊपर पैसे लेकर सवाल पूछने के आरोप लगे थे। बाद में कमीशन लेकर एमपी फंड बेचने के आरोप में भी इस तरह का प्रस्ताव लाया गया। लेकिन राहुल गांधी का मामला अलग है। राहुल एक तो नेता विपक्ष हैं और दूसरे देश की मुख्य विपक्षी पार्टी के सर्वोच्च नेता हैं। उनके ऊपर जिस तरह के आरोप लगाए गए हैं उनका कोई बहुत मजबूत आधार नहीं है। फोर्ड फाउंडेशन से संबंध या जॉर्ज सोरोस के साथ संबंध रखना सदस्यता खत्म करने का आधार नहीं हो सकता। तभी ऐसा लग रहा है कि भाजपा सांसद की ओर से पेश किया गया प्रस्ताव का इस्तेमाल राहुल को डराने और दबाव बनाने की रणनीति के तौर पर है। राइट विंग इकोसिस्टम के लोग यह भी कह रहे हैं कि अगर राहुल की सदस्यता चली जाती है तो प्रियंका गांधी वाड्रा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बन जाएंगी।

सरकार फाइलों में नहीं, मैदान में करेगी काम : सीएम धामी

सीएम धामी हरिद्वार में एक्शन मोड में-चौपाल में सुनी समस्याएं, मौके पर दिए समाधान के आदेश

हरिद्वार। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी आज हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के ग्राम आर्यनगर (गाजीवाली), श्यामपुर कांगड़ी में आयोजित 'जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार' अभियान के अंतर्गत आयोजित मुख्य सेवक की चौपाल कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। मुख्यमंत्री ने जनता के बीच बैठकर सीधे संवाद किया और स्पष्ट संदेश दिया कि सरकार अब फाइलों में नहीं, मैदान में काम करेगी। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों के ग्राम प्रधानों एवं स्थानीय नागरिकों ने अपनी-अपनी समस्याएं मुख्यमंत्री के समक्ष रखीं। मुख्यमंत्री ने प्रत्येक समस्या को गंभीरता से सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के सख्त निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी को प्राप्त सभी प्रार्थना पत्रों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी शिकायत को लंबित रखना स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनता की समस्याओं पर देरी या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अन्य विभागीय अधिकारियों को भी निर्देशित किया गया कि जिन समस्याओं का समाधान तत्काल संभव है, उनका निस्तारण मौके पर ही किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मुख्य सेवक की चौपाल' केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सरकार की जवाबदेही का जीवंत प्रमाण है। सरकार का उद्देश्य है कि आमजन को सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें, बल्कि प्रशासन स्वयं उनके द्वार तक पहुंचे। मुख्यमंत्री ने दो टूक कहा कि राज्य सरकार जनहित के प्रति पूर्णत: प्रतिबद्ध है और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना ही सरकार का लक्ष्य है। जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही सरकार की प्राथमिकता है और इसके लिए हर स्तर पर जवाबदेही तय की जाएगी। मुख्यमंत्री ने भरोसा दिलाया कि जनसमस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं बरती जाएगी और सरकार जनता के साथ खड़ी है-हर समय, हर परिस्थिति में। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जनता का स्नेह, विश्वास और आशीर्वाद ही उनकी सबसे बड़ी ताकत और प्रेरणा है। उन्होंने स्वयं को जनता से अलग नहीं, बल्कि उनका सेवक बताते हुए कहा कि जनता की संतुष्टि ही उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मुख्यसेवक की चौपाल' कोई औपचारिक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि सरकार और जनता के बीच संवाद का एक जीवंत मंच है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे यहां लोगों की समस्याएं सुनने और उनके समाधान के लिए आए हैं। उन्होंने दोहराया कि सरकार का संकल्प प्रशासन को जनता के द्वार तक पहुंचाना है, ताकि आमजन को सरकारी कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें।

उन्होंने कहा कि संवेदनशीलता, पारदर्शिता और जवाबदेही सरकार का मूल मंत्र है। अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि जनहित सर्वोपरि रहे और किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि किसी की आवाज दबाई नहीं जाएगी और कोई शिकायत अनसुनी नहीं रहेगी। सरकार का लक्ष्य अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक योजनाओं का पूरा लाभ पहुंचाना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार' अभियान के अंतर्गत बीते डेढ़ माह में पूरे प्रदेश में लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह अभियान केवल समस्याओं का समाधान नहीं, बल्कि सरकार और जनता के बीच विश्वास का सशक्त सेतु है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किए गए हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 28,000 से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरियां प्रदान की जा चुकी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पारदर्शी एवं निष्पक्ष भर्ती प्रक्रिया के माध्यम से योग्य युवाओं को अवसर प्रदान करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार युवाओं को स्वरोजगार एवं उद्यमिता के लिए भी निरंतर प्रोत्साहित कर रही है, जिससे प्रदेश का युवा आत्मनिर्भर बन सके और राज्य के समग्र विकास में भागीदार बन सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों के हितों की रक्षा और उनकी आय में वृद्धि के लिए सरकार द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की समस्याओं के समाधान, कृषि उत्पादों के बेहतर मूल्य, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार तथा आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। राज्य सरकार किसानों के समग्र सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लागू कर उत्तराखंड ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय सामाजिक समरसता, समानता एवं न्याय की भावना को सुदृढ़ करने वाला है। उन्होंने इसे राज्य की जनता के हित में लिया गया दूरदर्शी एवं साहसिक निर्णय बताया। मुख्यमंत्री ने दोहराया कि राज्य सरकार 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की भावना के साथ कार्य कर रही है तथा प्रदेश के युवाओं, किसानों और आमजन के कल्याण हेतु निरंतर प्रयासरत रहेगी। हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सड़क, बिजली और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में किए गए सुधार अब धरातल पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। किसानों के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया गया है तथा कृषि को लाभकारी बनाने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। युवाओं को रोजगार, स्वरोजगार और कौशल विकास से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ठोस कार्य किए जा रहे हैं। मातृशक्ति के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएं संचालित हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के समन्वय से प्रदेश में विकास कार्यों को नई गति मिली है। डबल इंजन सरकार की प्रतिबद्धता के कारण योजनाएं बिना भेदभाव के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही हैं। तकनीक और पारदर्शिता के माध्यम से भ्रष्टाचार पर सख्त प्रहार किया गया है और प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता के सुझाव ही सरकार के लिए मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। सरकार और जनता यदि साथ मिलकर कार्य करें तो विकास की कोई सीमा नहीं रहती। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रदेशवासियों के सहयोग और विश्वास से उत्तराखंड को देश का श्रेष्ठ राज्य बनाने के 'विकल्प रहित संकल्प' को अवश्य सिद्ध किया जाएगा। कार्यक्रम में पूर्व विधायक स्वामी यतीश्वरानंद, जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन के अधिकारी तथा स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

लक्सर रेलवे स्टेशन पर बम रखा होने की सूचना मिलने से हड़कंप मचा

रुड़की। पुलिस कंट्रोल रूम को लक्सर रेलवे स्टेशन पर बम रखा होने की सूचना मिलने से हड़कंप मच गया। आनन-फानन जीआरपी और आरपीएफ ने बम निरोधक दस्ते के साथ प्लेटफार्म, सर्कुलेटिंग एरिया, प्रतीक्षालय, टिकटघर, यार्ड आदि स्थानों पर सघन चेकिंग शुरू कर दी। रुड़की सहित दूसरे रेलवे स्टेशनों पर भी पुलिसकर्मियों को अलर्ट कर दिया। घंटों की छानबीन के बाद सब कुछ सामान्य मिलने पर पुलिस ने राहत की सांस ली। इस दौरान फोन पर सूचना देने वाले को ट्रेस करने की कार्रवाई भी जारी रही। लोकेशन मिलने पर पुलिस टीम ने झूठी सूचना देने के आरोपी कुलबीर निवासी खानपुर को गिरफ्तार कर लिया। लक्सर जीआरपी थानाध्यक्ष रचना देवरानी ने बताया कि बृहस्पतिवार की सुबह किसी व्यक्ति ने पुलिस कंट्रोल रूम फोन कर बताया कि लक्सर रेलवे स्टेशन पर बम रखा गया है। कंट्रोल रूम से सूचना प्रसारित होते ही पुलिस हरकत में आ गई। एसपी रेलवेज अरुणा भारती के निर्देश पर तत्काल जीआरपी ने आरपीएफ और बीडीएस के साथ रेलवे स्टेशन, परिसर और ट्रेनों में सघन चेकिंग शुरू कर दी। इस दौरान निकट के रुड़की, डौसनी, लंढौरा, ऐथल, पथरी, रायसी जैसे स्टेशनों पर भी पुलिसकर्मियों को अलर्ट किया गया। घंटों चेकिंग के बाद कोई बम या विस्फोटक नहीं मिलने पर सभी ने राहत की सांस ली। इस बीच पुलिस फोनकर्ता के संबंध में भी जानकारी जुटाती रही। फोनकर्ता की पहचान होने के बाद थानाध्यक्ष रचना देवरानी ने टीम के साथ लोकेशन ट्रेस कर आरोपी कुलबीर निवासी खानपुर थाना खानपुर को हिरासत में लिया। जिस मोबाइल से फोन किया गया था उसे भी आरोपी से बरामद कर लिया गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि आरोपी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया जाएगा।

ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज में तीसरे दिन भी कक्षाओं का बहिष्कार

हरिद्वार। ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज से बीएएमएस कर रहे विद्यार्थियों ने तीसरे दिन भी विभिन्न कक्षाओं का बहिष्कार किया। साथी की आत्महत्या से गमजदा छात्र-छात्राएं परीक्षा परिणाम में देरी से नाराज हैं। मंगलवार को उन्होंने आयुर्वेद विवि प्रशासन के खिलाफ धरना दिया। उनका कहना है कि समय पर परीक्षा परिणाम घोषित न होने से शैक्षणिक सत्र प्रभावित हो रहा है। कई बार आश्वासन के बावजूद स्थिति में सुधार न होने से धैर्य जवाब दे रहा है। उन्होंने बीएएमएस छात्र यशपाल की आत्महत्या का मामला भी उठाया। उनका आरोप है कि परीक्षा परिणाम में देरी और शैक्षणिक दबाव के कारण ही यशपाल ने गंगा में कूदकर आत्महत्या की। बता दें कि यशपाल का शव मिलने के बाद से ही छात्र-छात्राओं ने कार्य बहिष्कार शुरू किया। वे इस मामले की निष्पक्ष जांच और परीक्षा परिणाम शीघ्र घोषित करने की मांग उठा रहे हैं।

डीपीएस दौलतपुर-एसएमएयू इंटरनेशनल में एमओयू

हरिद्वार। सिडकुल मैन्युफेक्चरर्स एसोसिएशन उत्तराखंड (एसएमएयू) और अनुषा द एजुकेशनल सोसायटी के अंतर्गत संचालित डीपीएस दौलतपुर, कनखल के बीच एमओयू हुआ है। यह एमओयू विद्यार्थियों को कक्षा से निकलकर वास्तविक औद्योगिक दुनिया से जोड़ने की ठोस पहल है। इसके तहत छात्रों को औद्योगिक भ्रमण, विशेषज्ञों के व्याख्यान, कौशल विकास और करियर मार्गदर्शन सत्र कराए जाएंगे। 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' की दिशा में भी आपसी सहयोग किया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक और व्यावसायिक ज्ञान का लाभ मिल सके। इस एमओयू पर एसएमएयू से हरिंद्र के. गर्ग और विकास गोयल, अनुषा द एजुकेशनल सोसायटी से अजय जैन और पीयूष जैन ने हस्ताक्षर किए।

जिला कोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी

हरिद्वार। जिला कोर्ट के प्रशासनिक कार्यालय में उस समय हड़कंप मच गया, जब फैक्स के जरिये कोर्ट कक्ष को बम से उड़ाने का धमकी भरा संदेश मिला। जानकारी के अनुसार, इस संदेश में दोपहर 12:15 बजे जिला कोर्ट में बम विस्फोट की धमकी दी गई थी। मंगलवार को इसी आशय की एक ई-मेल भी मिलने की सूचना है। इस संदेश में तमिलनाडु में ईडब्ल्यूएस आरक्षण लागू करने से रोकने का उल्लेख था। उधर, मंगलवार को स्टेट बार काउंसिल ऑफ उत्तराखंड के चुनाव के चलते अधिकांश अधिवक्ता चुनावी प्रक्रिया में व्यस्त रहे।

बॉर्डर-2 में रोल मिलने पर खुशी से रो पड़ी थी मेधा राणा

सनी देओल, वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ और अहान शेट्टी स्टारर फिल्म बॉर्डर-2 बॉक्स ऑफिस पर शानदार कलेक्शन कर रही है। फिल्म में लीड रोल्स की चर्चा हर कोई कर रहा है, लेकिन फिल्म में मेधा राणा ने भी महत्वपूर्ण रोल प्ले किया है। मेधा ने मेजर होशियार सिंह दहिया की पत्नी धनवंती देवी का रोल प्ले किया है, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि अभिनेत्री खुद एक आर्मी परिवार से ताल्लुक रखती हैं और वे उस डर और इमोशंस को जी चुकी हैं, जिन्हें फिल्म में दिखाया गया है। बॉर्डर-2 जैसी फिल्म में सेलेक्ट होने के अनुभव पर मेधा राणा ने कहा, जब मुझे पहली बार कॉल आया तो मैं खुशी से रो पड़ी थी। फिल्म के लिए मैंने कई राउंड ऑडिशन दिए थे और कास्टिंग डायरेक्टर छाबड़ा सर ने मुझे बुलाकर सामने से बताया था कि मैं सेलेक्ट हो चुकी हूं। वो पल मेरे लिए सबसे प्यारा था और खुशी के मारे मैं बहुत रोई थी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि इतनी बड़ी फिल्म में मुझे काम करने का मौका मिलेगा। अब काम करने के बाद खुद पर धीरे-धीरे यकीन कर पा रही हूं।

फिल्म में मेधा ने मेजर होशियार सिंह दहिया की पत्नी धनवंती देवी का किरदार निभाया है। अपने किरदार पर बात करते हुए अभिनेत्री ने कहा, ये किरदार इमोशनली बहुत स्ट्रांग था क्योंकि ये उन पत्नियों की हिम्मत को दिखाता है, जिन्होंने देश के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। जब मुझे पहली बार स्क्रिप्ट पढ़ने के लिए दी गई तो मैं समझ गई कि किरदार बहुत सारी जिम्मेदारी और इमोशंस के साथ आता है। अभिनेत्री ने आगे कहा, मेरे परिवार की तीन पीढ़ियों ने आर्मी में सेवा दी है और मेरे पापा आज भी सेवाएं दे रहे हैं और यही कारण है कि इस फिल्म को पूरी जिम्मेदारी से निभाना मेरा फर्ज था। हमने भी उन इमोशंस को जिया है, जो फिल्म में पर्दे पर दिखाए गए हैं। बॉर्डर-2 में बॉर्डर से अलग क्या देखने को मिलेगा के सवाल पर मेधा ने बताया कि हर फिल्म का किरदार अलग है और इमोशन और हिम्मत से भरा है। फिल्म में प्यार, इमोशन, फैमिली, और हिम्मत को दिखाया गया है क्योंकि नहीं पता कि वापस कब लौट पाएंगे। चारों किरदार अलग हैं, लेकिन चारों कहानी ही पूरी फिल्म को बनाती हैं। फिल्म को लेकर खुद को तैयार करने के सवाल पर मेधा ने बताया कि जो मेरा किरदार है, वो मेरी नानी पहले जी चुकी हैं, क्योंकि 1971 के समय मेरी मां का जन्म हुआ था और नाना की पोस्टिंग बांग्लादेश में थी। मेरी नानी ने मुझे बहुत सारी कहानियां और टिप्स भी दीं, जिससे मुझे फिल्म के किरदार को निभाने में बहुत मदद मिली। वरुण धवन के साथ काम करने के एक्सपीरियंस पर मेधा ने कहा, उनके साथ काम करके बहुत मजा आया और शूटिंग के समय काफी कुछ सीखने को मिला। सेट पर पहला दिन काफी नर्वसनेस के साथ बीता था, लेकिन वरुण ने काफी मदद की।

तू या मैं में मेरा किरदार साइड रोल नहीं, कहानी की मजबूत कड़ी है: पारुल गुलाटी

बॉलीवुड और ओटीटी की दुनिया में लगातार अपनी अलग पहचान बना रहीं अभिनेत्री पारुल गुलाटी इन दिनों अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स को लेकर चर्चा में हैं। अभिनय के साथ-साथ एक सफल उद्यमी के तौर पर भी अपनी पहचान रखने वाली पारुल अब थ्रिलर फिल्म तू या मैं में नजर आएंगी। उन्होंने हाल ही में इस फिल्म और अपने किरदार को लेकर खुलकर बात की है और इसे अपने करियर का एक बेहद खास मौका बताया। फिल्म तू या मैं में पारुल गुलाटी के साथ आदर्श गौरव और शनाया कपूर मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म का निर्देशन आनंद एल राय कर रहे हैं, जिनकी फिल्मों की पहचान भावनाओं, रिश्तों और गहराई से जुड़ी कहानियों के लिए रही है। इस फिल्म में पारुल लायरा नाम का किरदार निभा रही हैं, जो शनाया कपूर के किरदार की करीबी दोस्त और मैनेजर है। फिल्म का हिस्सा बनने पर पारुल ने कहा, आनंद एल राय का सिनेमा मुझे हमेशा से आकर्षित करता रहा है। फिल्म की कहानी नाटकीय होने के साथ-साथ भावनात्मक रूप से शानदार है और दर्शकों को भीतर तक छू जाएगी।

पारुल ने अपने किरदार को लेकर बताया, मेरा किरदार लायरा सिर्फ एक दोस्त नहीं है बल्कि एक ऐसा इंसान है जो हर मुश्किल में साथ खड़ी रहती है, सही सवाल पूछती है, जरूरत पडने पर टोकती भी है और बिना शर्त समर्थन करती है। मैं इस किरदार को निभाकर बेहद खुश हूं और अभी भी इस एहसास में डूबी हुई हूं कि मुझे इतना अहम रोल निभाने का मौका मिला है।

पारुल ने कहा, लायरा कोई साधारण या साइड कैरेक्टर नहीं है, बल्कि कहानी की भावनात्मक रीढ़ है। यह किरदार फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती है। मेरे लिए यह अनुभव इसलिए भी खास है क्योंकि मैं ऐसी फिल्मों का हिस्सा बनना चाहती थी जिनमें किरदारों की गहराई हो और कहानी दिल से जुड़ी हो। इस फिल्म का हिस्सा बनना मेरे लिए किसी सपने के सच होने जैसा है।

आनंद एल राय के साथ काम करने के अनुभव को लेकर पारुल गुलाटी ने कहा, एक कलाकार और एक क्रिएटर के तौर पर इससे बेहतर सहयोग शायद मुझे कभी नहीं मिल सकता था। आनंद एल राय की फिल्में वही सिनेमा हैं, जिनकी ओर मैं हमेशा खिंचती रही हूं। यह एक ऐसा दुर्लभ मौका है, जो जिंदगी में कम ही मिलता है, जहां बड़ी स्क्रीन की भव्यता के साथ-साथ कहानी में दिल और भावना दोनों मौजूद हों।

पारुल गुलाटी ने फिल्म की पूरी टीम के प्रति आभार भी जताया। उन्होंने कहा, मैं मेकर्स की शुक्रगुजार हूं, जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया और मुझे लायरा जैसा मजबूत किरदार सौंपा। मेरे लिए एक अनोखी थ्रिलर और क्रिएचर यूनिवर्स का हिस्सा बनना बेहद खास अनुभव है। मैं इस फिल्म को लेकर बहुत खुश, आभारी और उत्साहित हूं और चाहती हूं कि दर्शक इसे बड़े पर्दे पर जरूर देखें।

ओ रोमियो का नया गाना इश्क का फीवर जारी, अरिजीत सिंह ने लगाए सुर

विशाल भारद्वाज की फिल्म ओ रोमियो रिलीज के लिए तैयार है। शाहिद कपूर और तृप्ति डिमरी अभिनीत इस फिल्म के अब तक दो गाने रिलीज हो चुके हैं, जिन्हें काफी पसंद भी किया गया। अब फिल्म निर्माताओं ने फिल्म का तीसरा गाना इश्क का फीवर रिलीज किया है, जिसे अरिजीत सिंह ने गाया है। जी हां! अरिजीत सिंह, जिन्होंने हाल ही में प्लेबैक सिंगिंग से संन्यास की घोषणा की थी, अब एक नया गाना लेकर आए हैं। हालांकि, प्रशंसकों को अरिजीत की आवाज सुनकर खुशी तो हुई, लेकिन साथ ही वे इस बात को लेकर भी चिंतित नजर आ रहे हैं कि कहीं यह उनका आखिरी गाना तो नहीं है। ओ रोमियो के संगीतकार और निर्देशक विशाल भारद्वाज ने अरिजीत की प्लेबैक सिंगिंग से रिटायरमेंट की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया था। वीडियो में विशाल और अरिजीत के साथ रेखा भारद्वाज भी नजर आ रही हैं, जबकि निर्देशक और संगीतकार इश्क का फीवर गाना गाते हुए दिखाई दे रहे हैं। और अब यह गाना रिलीज हो चुका है! ऐसे में अरिजीत सिंह के फैंस भी इमोशनल हो गए और सिंगर से अपना फैसला वापस लेने की अपील कर रहे हैं। कई ने वीडियो के कमेंट सेक्शन में कमेंट करते हुए सिंगर से वापसी की गुहार लगाते दिखे। अरिजीत सिंह और विशाल भारद्वाज ने हिंदी सिनेमा के कुछ सबसे यादगार गाने एक साथ बनाए हैं, जैसे कि फिल्म हैदर का खुल कभी तो और रंगून का ये इश्क है। उनके गाने अपनी भावनात्मक गहराई के लिए जाने जाते हैं, जिन्हें अक्सर गुलजार लिखते हैं। इस जोड़ी ने 2026 में आई फिल्म ओ रोमियो के हम तो तेरे लिए थे और इश्क का फीवर गानों में भी साथ काम किया है, जिनके रिलीज होने पर फैंस गाने पर जमकर प्यार लुटा रहे हैं।

हाल ही में सलमान खान की फिल्म बैटल ऑफ गलवान का उनका गाना मातृभूमि रिलीज हुआ है, जिसे उनके फैंस से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। अरिजीत सिंह ने बॉलीवुड को तुम ही हो, चन्ना मेरेया, अगर तुम साथ हो, केसरिया और तुझे कितना चाहने लगे जैसे कई यादगार गाने दिए हैं। भारतीय संगीत जगत में उनके योगदान के लिए उन्हें दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं। वहीं सिंगर ने 27 जनवरी को सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर करते हुए बताया था कि वह प्लेबैक सिंगिंग से संन्यास ले रहे हैं और उनके इस फैसले ने हर किसी को चौंका दिया था।

रतालू के सेवन से होने वाले 5 प्रमुख फायदे, आज से ही डाइट में करें शामिल

लोग अक्सर रतालू को शकरकंद समझ लेते हैं, लेकिन यह शकरकंद की तुलना में कम मीठे और ज्यादा स्टार्च वाले होते हैं। इसके अंदर का हिस्सा सफेद, पीला, बैंगनी या नारंगी होता है। पीले, नारंगी और बैंगनी रंग के रतालू में एंटीऑक्सीडेंट, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन की भरपूर मात्रा होती है, वहीं सफेद रतालू में पोटैशियम की मात्रा ज्यादा होती है। इन सबके कई स्वास्थ्य लाभ हैं। आइए आज हम आपको रतालू से होने वाले पांच फायदे बताते हैं।

दिमाग के स्वास्थ्य को बढ़ाए

रतालू का सेवन करने से आपके दिमाग के स्वास्थ्य को मदद मिल सकती है। इसमें डायोसजेनिन नामक एक रसायन होता है जो न्यूरॉन के विकास को बढ़ाने और दिमाग के कामों में सुधार करने के लिए है। इसके अलावा यह मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद होता है। इसमें न्यूरोप्रोटेक्टिव गुण होता है जो मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने में मददगार होता है। आप चाहें तो रतालू को उबाल कर या फिर इसकी सब्जी बनाकर खा सकते हैं।

कैंसर के इलाज में फायदेमंद

रतालू में कैंसररोधी गुण पाए जाते हैं जो कैंसर को रोकने में मददगार होता है और यह कैंसर कोशिकाओं को फैलने से रोकता है। इसमें फिनोल, फ्लेवोनोइड्स और विटामिन सी जैसे एंटीऑक्सीडेंट उच्च मात्रा में मौजूद हैं। इन एंटीऑक्सिडेंट्स में कैंसर से लड़ने वाले प्रभाव होते हैं। वहीं रतालू में मौजूद विटामिन ए फेफड़े और मुंह के कैंसर से लड़ने में सहायक है। इसके अलावा इसमें मौजूद फाइबर शरीर से विषाक्त तत्वों को बाहर निकालता है।

श्वसन प्रणाली को बनाए रखने में कारगर

रतालू में कई पोषक तत्व मौजूद हैं। करीब 100 ग्राम रतालू में 118 कैलोरी, 0.2 ग्राम वसा, 816 मिलीग्राम पोटैशियम, 28 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 4 ग्राम फाइबर, 1.5 ग्राम प्रोटीन, 28 प्रतिशत विटामिन सी और 15 प्रतिशत विटामिन बी, 5 प्रतिशत मैगनीशियम आदि पाए जाते हैं। इस वजह से इसके सेवन से श्वसन प्रणाली बढ़िया काम करती है और आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करती है। यह फेफड़ों की समस्या से भी राहत दिलाता है।

कोलेस्ट्रॉल को रखें कंट्रोल

कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ने पर रतालू का सेवन आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। दरअसल, इसमें मौजूद फाइबर खराब कोलेस्ट्रॉल को बढ़ने से रोकता है और कब्ज की समस्या से राहत दिलाता है। इससे आपकी पाचन क्रिया भी दुरुस्त रहती है। यह आपके मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

त्वचा के स्वास्थ्य को बढ़ाए

रतालू के सेवन से शरीर के विषाक्त तत्व बाहर निकल जाते हैं जिससे त्वचा रोग दूर होने में मदद मिलती है। इसमें मौजूद विटामिन सी हमारे शरीर में कोलेजन निर्माण को बढ़ावा देते हैं। यह एक ऐसा प्रोटीन है जो त्वचा की कोमलता बनाए रखने में मदद करता है। बता दें कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ शरीर का कोलेजन उत्पादन कम होने लगता है, इसलिए कोलेजन के स्तर को बनाए रखने में इसका सेवन जरूरी है।

अनचाहे बालों को हटाने वाली वैक्स को घर पर बनाना है आसान

त्वचा के अनचाहे बालों को हटाने का एक लोकप्रिय तरीका वैक्सिंग न सिर्फ डेड स्किन को हटाता है बल्कि त्वचा को मुलायम और चमकदार भी बनाता है। हालांकि, यह तरीका दर्दनाक हो सकता है क्योंकि इस्तेमाल के दौरान इन्हें गरम करके त्वचा पर लगाया जाता है। आइए आज हम आपको घर पर पांच तरह की वैक्स बनाने के तरीके बताते हैं। इनके इस्तेमाल से आप बिना दर्द के वैक्सिंग कर सकेंगे।

चीनी वैक्स-चीनी वैक्स पार्लर वैक्सिंग की तुलना में कम दर्दनाक होता है और यह आपकी त्वचा को एक्सफोलिएट करने समेत इसे मुलायम बना सकता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक बर्तन में दानेदार चीनी, नींबू का रस, नमक और पानी एक साथ पिघलाएं। अब इस मिश्रण को उबालें और तब तक पकाते रहें जब तक कि यह कैरेमल जैसा रंग न ले ले। इसके बाद जब यह वैक्स गुनगुनी सी हो जाए तो इसका इस्तेमाल करें।

शहद की वैक्स-एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-माइक्रोबियल गुणों से भरपूर शहद की वैक्स से भी आसानी से अनचाहे बालों से छुटकारा मिल सकता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक माइक्रोवेव सेफ बाउल में शहद, नींबू का रस और सफेद दानेदार चीनी को डालकर 30 सेकंड के लिए माइक्रोवेव में गरम करें। इसके बाद मिश्रण को अच्छे से मिलाने के बाद इसका इस्तेमाल वैक्स की तरह करें।

फलों की वैक्स-फलों से भी वैक्स बनाई जा सकती है और यह सभी तरह की त्वचा पर सूट करती है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक गरम पैन में दानेदार चीनी, स्ट्रॉबेरी का जूस, नींबू का रस, नमक और पानी को मिलाएं। अब इस मिश्रण को उबालें और तब तक पकाएं जब तक यह अच्छे से गाढ़ा न हो जाए। इसके बाद फलों की वैक्स तैयार है।

चॉकलेट वैक्स-चॉकलेट वैक्स को बनाने के लिए कोको पाउडर का इस्तेमाल किया जाता है। यह त्वचा को गहराई से साफ करने समेत ब्लड सर्कुलेशन को सुधारने में मदद कर सकता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले गरम पैन में कोको पाउडर, दानेदार चीनी, ग्लिसरीन, नमक और नींबू के रस को मिलाकर मिश्रण को उबालें। इसे तब तक पकाते रहें जब तक कि मिश्रण गाढ़ा न हो जाए। फिर इसे ठंडा होने दें और यह तैयार है।

एलोवेरा वैक्स

यह वैक्स घने बालों को आसानी से हटा देगी और त्वचा को मुलायम भी बना देगी। वहीं, इसमें मौजूद जिलेटिन कोलेजन को बढ़ावा देने और त्वचा को निखारने में मदद करेगा। वैक्स बनाने के लिए एक माइक्रोवेव बाउल में जिलेटिन, एलोवेरा जेल और कच्चे दूध को मिलाकर कुछ सेकंड के लिए माइक्रोवेव करें। अब इसे अनचाहे बालों पर लगाएं और इसके पूरी तरह से सूख जाने पर इसे धीरे से उतारें।

आत्मविश्वासी बनने के लिए खुद से प्यार करना है जरूरी

बहुत लोग ऐसा सोचते हैं कि खुद से प्यार आपको स्वार्थी और अहंकारी बनाता है, लेकिन यह सच नहीं है। अपने आप से प्यार नहीं करना आपको अपनी इच्छाओं और सपनों के प्रति कम आत्मविश्वास और अयोग्य महसूस कराता है। वहीं जब आप खुद से प्यार करते हैं तो आप ज्यादा आत्मविश्वास महसूस करते हैं जिससे सपनों को पूरा करने में मदद मिलती है। आइए आज आत्मविश्वासी बनने के लिए खुद से प्यार करने के पांच टिप्स जानते हैं।

अपने शरीर का ख्याल रखें-आपका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों एक-दूसरे से बहुत जुड़े होते हैं। जब तक आप स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाली धूम्रपान और शराब का सेवन जैसी आदतें नहीं छोड़ेंगे, तब तक आप आत्मविश्वास महसूस नहीं कर पाएंगे। इसके लिए आपको एक स्वस्थ आहार खाने, रोजाना एक्सरसाइज करने, योग का अभ्यास करने और पर्याप्त नींद लेने जैसे तरीके आजमाने चाहिए।

दूसरों से अपनी तुलना करना बंद करें-दूसरों के साथ खुद की तुलना करना एक स्वाभाविक व्यवहार है और इससे बचना आसान नहीं है। जब आप अपनी तुलना दूसरों से करते हैं तो आपको अपने खुद के विचार और सोच को महसूस करने में दिक्कत होती है। इसी वजह से आपको जब लगे कि आप अपनी तुलना दूसरों से कर रहे हैं तो खुद को वहीं रोक दें क्योंकि यह आपके आत्मविश्वास के लिए हानिकारक है।

माफ करना सीखें और खुद से नरम स्वभाव रखें-अगर आप हमेशा अपनी पुरानी गलतियों पर पछताते रहते हैं तो इससे आपका आत्मविश्वास कम हो जाता है। जब आपको लगता है कि आपने कोई गलती की है या किसी काम को करने में असफल हो गए हैं तो ऐसे में अपने आप से दया का व्यवहार रखें। अपनी पिछली गलतियों के लिए खुद को माफ करना सीखें। इसकी मदद से आप भावनात्मक रूप से ज्यादा नरम रह सकते हैं और चुनौतीपूर्ण भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

खुद से सकारात्मक बातें करें-हमारी अधिकांश जिंदगी इस बात पर निर्भर करती है कि हम खुद के बारे में क्या सोचते हैं। अगर आप हमेशा नकारात्मक सोचेंगे और बातें करेंगे तो आपको लगेगा कि आप ये काम नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह बहुत मुश्किल है। इसके लिए फिर आप कोशिश भी नहीं करते हैं। वहीं खुद से सकारात्मक बातें करने से आपके मन से संदेह दूर होते हैं और नई चुनौतियों का सामना करने में आपको मदद मिलती है।

अपने आसपास सकारात्मक लोगों को रखें-अगर आप अपना ज्यादातर समय सकारात्मक लोगों के साथ बिताएंगे तो यह खुद की देखभाल करने वाली सभी गतिविधियों में से सबसे अच्छी होगी। उन लोगों से दूर रहें जो आमतौर पर आपकी आलोचना करते हैं या नकारात्मक सोचते हैं। जिन लोगों के साथ आप ज्यादा समय बिताते हैं, उनके बारे में आपके विचार आपको प्रभावित करते हैं, इसलिए ऐसे लोगों के साथ रहें जो आपकी परवाह करते हैं और आपके लिए अच्छा सोचते हैं।

हर महिला के पास होने चाहिए ये 5 सिल्क स्कार्फ, साधारण आउटफिट को बना देंगे खास

एक अच्छा सिल्क स्कार्फ न केवल आपके लुक को निखारता है, बल्कि इसे पहनने से आप हमेशा स्टाइलिश भी दिखती हैं। यह एक सदाबहार फैशन एक्सेसरी है, जो हर मौसम में आपके कपड़ों को खास बना सकती है। चाहे आप इसे किसी पारंपरिक कपड़े के साथ पहनें या आधुनिक कपड़ों के साथ, सिल्क स्कार्फ हर बार एक नया अंदाज देता है। आज के फैशन टिप्स में जानिए आपके पास किन रंगों वाले सिल्क स्कार्फ होने चाहिए।

सफेद रंग का सिल्क स्कार्फ

सफेद रंग का सिल्क स्कार्फ किसी भी कपड़े के साथ आसानी से मेल खाता है। यह रंग न केवल साफ-सुथरा दिखता है, बल्कि इसे पहनकर आप हमेशा ताजगी महसूस कर सकती हैं। सफेद रंग का सिल्क स्कार्फ आप किसी भी रंग के कपड़े के साथ पहन सकती हैं और यह हर तरह की स्टाइलिंग में अच्छा लगता है। चाहे आप इसे किसी पारंपरिक कपड़े के साथ पहनें या आधुनिक कपड़ों के साथ, यह हर बार एक नया अंदाज देता है।

काले रंग का सिल्क स्कार्फ

काले रंग का सिल्क स्कार्फ एक बेहतरीन विकल्प है, जो हर मौके पर खास लुक देता है। इसे आप किसी भी रंग के कपड़े के साथ पहन सकती हैं और यह हर तरह की स्टाइलिंग में अच्छा लगता है। काले रंग का सिल्क स्कार्फ आपके व्यक्तित्व को निखारता है और आपको आत्मविश्वास से भरपूर महसूस कराता है। आप इसे पार्टी में जाते समय भी पहन सकती हैं और ऑफिस के कपड़ों पर भी स्टाइल कर सकती हैं।

लाल रंग का सिल्क स्कार्फ

लाल रंग का सिल्क स्कार्फ हर महिला की अलमारी का हिस्सा होना चाहिए, जो जीवंत लगता है। यह रंग न केवल ध्यान खींचता है, बल्कि इसे पहनकर आप हमेशा ऊर्जा से भरी महसूस कर सकती हैं। लाल रंग का सिल्क स्कार्फ किसी भी मौके पर अच्छा लगता है, फिर चाहे वह शादी समारोह हो या डेट नाइट। आप इसे कुर्ती या साड़ी जैसे पारंपरिक परिधानों के ऊपर भी स्टाइल कर सकती हैं।

मुख्यमंत्री धामी ने किया नयार वैली फेस्टिवल का उद्घाटन

पौड़ी (संवाददाता)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को जनपद पौड़ी गढ़वाल के बिलखेत में आयोजित नयार वैली फेस्टिवल का शुभारंभ किया। इस महोत्सव के शुभारंभ के साथ ही नयार घाटी की पर्यटन, संस्कृति एवं साहसिक गतिविधियों की अपार संभावनाओं को नई पहचान मिलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत हुई है। मुख्यमंत्री ने नयार घाटी में पैराग्लाइडिंग प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करने, पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विकासखंड पोखड़ा में रसलवाँण दीवा मंदिर स्थलीय कार्य, विकासखंड बीरोंखाल में कालिंका मंदिर स्थलीय कार्य, विकासखंड एकेश्वर में एकेश्वर महादेव मंदिर स्थलीय कार्य तथा विकासखंड पाबौ में चम्पेश्वर महादेव मंदिर से जुड़े विकास कार्यों की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण कर योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग की लाभार्थी करिश्मा और सलोनी को महालक्ष्मी किट प्रदान की, योगिता की गोदभराई की रस्म संपन्न कराई तथा समाज कल्याण विभाग के लाभार्थियों तुलसीदास एवं बीरेन्द्र को दिव्यांग उपकरण भी वितरित किए। मुख्यमंत्री ने महिला समूहों एवं स्थानीय नागरिकों से संवाद कर उनके अनुभव जाने और सरकार की योजनाओं का लाभ अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने पर बल दिया। उन्होंने साइक्लिस्टों तथा एंगलरों से भी संवाद कर उनके साहस और उत्साह की सराहना की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने पैराग्लाइडिंग, पैरामोटरिंग, हॉट एयर बैलून, माउंटेन बाइकिंग, कयाकिंग, एंगलिंग, जिपलाइन, बर्मा ब्रिज, रिवर्स बंजी सहित विभिन्न एडवेंचर गतिविधियों का फ्लैग ऑफ कर औपचारिक शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि नयार वैली क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य और साहसिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है तथा ऐसे आयोजनों से स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। मुख्यमंत्री ने सभी को होली की अग्रिम शुभकामनाएं दीं और कहा कि नयार घाटी सहित जनपद पौड़ी गढ़वाल का यह संपूर्ण क्षेत्र अपनी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और साहसिक संभावनाओं के कारण अत्यंत अद्वितीय है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को सौंदर्य और रोमांच का अनुपम संगम प्रदान किया है, जिससे यह साहसिक पर्यटन और युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए आदर्श स्थल बनता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए सरकार सकारात्मक रूप से कार्य करेगी, ताकि स्थानीय युवाओं को अपने ही क्षेत्र में आगे बढ़ने और स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य केवल योजनाएं बनाना नहीं, बल्कि उन्हें समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना भी है, जिससे प्रत्येक नागरिक विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार, अंत्योदय की भावना के साथ कार्य करते हुए सड़क, बिजली, पेयजल, दूरसंचार, शिक्षा और स्वास्थ्य सहित सभी मूलभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनपद के समग्र विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। श्रीनगर में 650 करोड़ रुपये की लागत से नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी का निर्माण प्रगति पर है, जबकि खोह नदी को प्रदूषण मुक्त और स्वच्छ बनाने के लिए 135 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया जा रहा है। पौड़ी के गड़िया गांव में प्रदेश की पहली एनसीसी अकादमी का निर्माण, कोटद्वार में 11 करोड़ की लागत से सॉलिड वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट और मालन नदी पर पुल निर्माण कार्य जारी है। मुख्यमंत्री ने कहा पौड़ी के ऐतिहासिक कलेक्ट्रेट भवन को हेरिटेज के रूप में संरक्षित किया जा रहा है तथा सतपुली में सिंचाई निरीक्षण भवन का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोटद्वार में खेल सुविधाओं के विस्तार, 50 बेड वाले आधुनिक चिकित्सालय के निर्माण, सीडीएस पार्क में विशाल तिरंगा, विज्ञान संग्रहालय, ट्राइडेंट पार्क, सतपुली झील, 20 करोड़ की लागत से माउंटेन म्यूजियम एवं तारामंडल जैसी परियोजनाएं भविष्य में पर्यटन और रोजगार के नए अवसर सृजित करेंगी। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इन सभी प्रयासों से क्षेत्र का संतुलित और सतत विकास सुनिश्चित होगा तथा स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में व्यापक सुधार आएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का निरंतर प्रयास शासन-प्रशासन को जन-जन तक पहुंचाना है। इसी उद्देश्य से 17 दिसंबर 2025 से 'जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार' अभियान शुरू किया गया, जिसके तहत प्रशासन के विभिन्न विभागों की टीमें प्रत्येक न्याय पंचायत में पहुंचकर लोगों की समस्याएं सुन रही हैं और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे उनके द्वार तक पहुंचा रही हैं। उन्होंने बताया कि इस अभियान के माध्यम से लोगों के प्रमाणपत्र और आवश्यक दस्तावेज घर-घर पहुंचाए गए, जिससे आमजन को कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़े। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य यही है कि हर नागरिक को समय पर सुविधाएं मिलें और उसकी समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी समाधान उसके अपने द्वार पर ही सुनिश्चित हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य का समग्र सामाजिक विकास सरकार का प्रमुख लक्ष्य और संकल्प है। उन्होंने कहा कि विकास के साथ-साथ राज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाए रखना, लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत करना तथा हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों का संरक्षण करना भी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है, जिसके लिए निरंतर प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि राज्य सरकार, उत्तराखंड को देश-विदेश में प्रमुख पर्यटन एवं एडवेंचर डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है और नयार वैली फेस्टिवल इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि यह एक आयोजन नहीं, बल्कि नयार घाटी की अपार प्राकृतिक सुंदरता, हमारी समृद्ध संस्कृति और साहसिक पर्यटन की असीम संभावनाओं का सशक्त परिचय है। इस महोत्सव के माध्यम से पैराग्लाइडिंग, माउंटेन बाइकिंग, कयाकिंग, हॉट एयर बैलून जैसी गतिविधियाँ युवाओं को नए अवसर प्रदान करेंगी और स्थानीय स्तर पर रोजगार के द्वार खोलेंगी। पर्यटन मंत्री कहा कि हमारा लक्ष्य उत्तराखंड को देश का अग्रणी एडवेंचर टूरिज्म डेस्टिनेशन बनाना है, जिसके लिए राज्य सरकार आधारभूत संरचना, कनेक्टिविटी और पर्यटन सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग से नयार घाटी आने वाले समय में देश-दुनिया के पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनेगी और विकास, रोजगार तथा सांस्कृतिक पहचान का नया अध्याय लिखेगी। विधायक राजकुमार पोरी ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में प्रदेश निरंतर विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव जनपद पौड़ी को पर्यटन मानचित्र पर नई पहचान दिलाएगा। साथ ही उन्होंने चिनवाड़ी डांडा पेयजल योजना की स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए नयार वैली फेस्टिवल को स्थायी रूप से आयोजित किए जाने का अनुरोध किया। बिलखेत में जिला प्रशासन द्वारा एक अद्वितीय एवं सुव्यवस्थित आयोजन संपन्न किया गया, जिसमें एक ही मंच पर 10 पृथक-पृथक गतिविधियों का सफल संचालन सुनिश्चित किया गया। विविध रोमांचक, सांस्कृतिक एवं जनसहभागिता आधारित कार्यक्रमों से सुसज्जित इस आयोजन ने न केवल प्रतिभागियों और दर्शकों में उत्साह का संचार किया, बल्कि प्रशासन की समन्वित कार्यप्रणाली और उत्कृष्ट व्यवस्थापन क्षमता का भी परिचय दिया। यह आयोजन नवाचार, सुव्यवस्था और बहुआयामी गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन का प्रेरक उदाहरण बनकर उभरा। इस अवसर पर उत्तराखण्ड गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष पं. राजेंद्र अणथ्वाल, जिला पंचायत अध्यक्षा रचना बुटोला, ब्लॉक प्रमुख कल्जीखाल गीता देवी, प्रमुख द्वारीखाल बीना राणा, जिला पंचायत सदस्य महेंद्र राणा, जिलाधिकारी स्वाति एस भदौरिया, मुख्य विकास अधिकारी गिरीश गुणवंत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वेश पंवार, एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

हरिद्वार में शिवाजी विराट हिंदू सम्मेलन का भव्य आयोजन

हरिद्वार। हरिद्वार के जगजीतपुर फुटबॉल ग्राउंड पर 22 फरवरी 2026 को जगजीतपुर मंडल के हिंदू समाज द्वारा शिवाजी विराट हिंदू सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। सैकड़ों पुरुष, महिलाएं और बच्चे परिवारसहित इसमें शामिल हुए, जो सनातन एकता का प्रतीक बना।

हवन पूजन, शंखनाद और मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से सम्मेलन की शुरुआत हुई। मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर स्वामी रूपेंद्र प्रकाश जी महाराज ने सनातन धर्म को प्राचीन, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जीवन शैली बताया। उन्होंने हिंदू एकता को सांस्कृतिक सूत्र के रूप में रेखांकित किया, जो करोड़ों लोगों को जोड़ता है।

स्वामी जी ने कहा कि आज बदलते परिवेश में हिंदू एकता जड़ों की रक्षा और शक्ति का आधार है। सनातन धर्म विशाल वटवृक्ष की तरह मानवता को शांति दे सकता है। अयोध्या राम मंदिर, सोमनाथ और बद्री-केदार के पुनरुत्थान को हिंदू स्वाभिमान का प्रतीक बताया, तथा एकता को सबसे बड़ा अस्त्र करार दिया। मुख्य वक्ता अनिल मित्तल ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्ष की यात्रा पर प्रकाश डाला। 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगवार द्वारा नागपुर में स्थापित संघ व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का मंत्र देता है। सेवा कार्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा राहत में स्वयंसेवकों की भूमिका सराहनीय है। शताब्दी वर्ष में स्वदेशी, स्वभाषा और स्वसंस्कृति पर जोर दिया जा रहा है।

डोबरियाल ने पंच परिवर्तन के जरिए परिवार से समाज निर्माण का आह्वान किया। स्वदेशी अपनाएं, प्रदूषण कम करें, सामाजिक समरसता लाएं, परिवार बचाएं और नागरिक कर्तव्यों का पालन करें। ये बदलाव आदर्श समाज की नींव रखेंगे।

भारत माता की आरती से कार्यक्रम समाप्त हुआ, मंच संचालन चित्रा शर्मा ने किया। बच्चों ने समा, रूही पाल, सृष्टि, परिधि, अवयव सैनी, सोनिया, अदिति और वर्षा आदि की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से समा बांध दिया। सम्मेलन ने हिंदू समाज में नई ऊर्जा का संचार किया।

आईआईटी रुड़की में चौथा रुड़की वाटर कॉन्क्लेव 2026 का उद्घाटन हुआ

रुड़की । भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की (आईआईटी रुड़की) ने राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान (एनआईएच) रुड़की के सहयोग से 23 से 25 फरवरी 2026 तक 'नेक्सस दृष्टिकोण के माध्यम से सीमापार जल सहयोग' विषय पर 4वें रुड़की वाटर कॉन्क्लेव (आरडब्ल्यूसी 2026) का उद्घाटन किया। यह द्विवार्षिक कॉन्क्लेव विश्वभर के प्रमुख नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, उद्योग जगत के नेताओं और जल विशेषज्ञों को उभरती जल चुनौतियों के एकीकृत एवं सतत समाधान पर विचार-विमर्श हेतु एक मंच प्रदान करता है। प्रमुख विषयगत क्षेत्रों में सीमापार नदी बेसिन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं सहनशीलता, हाइड्रो-मौसमीय चरम घटनाएँ, भूजल स्थिरता, जल गुणवत्ता, तथा जल-ऊर्जा-खाद्य नेक्सस शामिल हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. कमल किशोर पंत, निदेशक, आईआईटी रुड़की ने की। डॉ. वाई.आर.एस. राव, निदेशक, एनआईएच रुड़की, कॉन्क्लेव के सह-अध्यक्ष हैं, जबकि प्रो. आशीष पांडे, आईआईटी रुड़की, संयोजक के रूप में कार्य कर रहे हैं। सत्र का प्रारंभ पारंपरिक दीप प्रज्वलन और कुलगीत की प्रस्तुति से हुआ, जिसके पश्चात प्रो. आशीष पांडे द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। प्रो. कमल किशोर पंत; डॉ. वाई.आर.एस. राव; तथा डॉ. मार्क स्मिथ, महानिदेशक, अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (आईडब्ल्यूएमआई) ने संबोधन दिए। कार्यक्रम में पद्मश्री सम्मानित उमाशंकर पांडे, सवजीभाई धोलकिया और पोपटराव पवार के विशेष उद्बोधन, कॉन्क्लेव कार्यवाही का विमोचन, तथा डॉ. विनोद के. पॉल, सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार का मुख्य व्याख्यान शामिल था। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ। सभा को संबोधित करते हुए प्रो. कमल किशोर पंत ने कहा, 'जल सुरक्षा का सीधा संबंध जलवायु सहनशीलता, खाद्य प्रणालियों और ऊर्जा स्थिरता से है, क्योंकि एआई डेटा सेंटरों के बढ़ते उपयोग के कारण जल की मांग में वृद्धि हो रही है। रुड़की वाटर कॉन्क्लेव जैसे मंच साक्ष्य-आधारित संवाद को सक्षम बनाते हैं और सहयोगात्मक तथा विज्ञान-आधारित जल शासन के लिए वैश्विक साझेदारियों को प्रोत्साहित करते हैं।'

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड़) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400

ई-मेलः liveskgnews@gmail.com

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)

सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।